महापुरूष क्या होते हैं ?

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश जुलाई, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

गुरू जिसम नहीं होता। वह हमारी तरह ही जिसम तो जरूर रखता है, मगर जिसम रखते हुये भी वह अन्तर में कुछ और है। और क्या होता है ? परमात्मा की खबर कौन दे सकता है ? उसकी ज्योति के साथ कौन जोड़ सकता है ? यही कहना पड़ेगा कि जो उसी का स्वरूप हो, वही खुद हो। तो आज के दिन अब देखने वाली और विचारने वाली बात क्या है, किसी महापुरूष का दिन मनाने की, जन्म उत्सव मनाने की सबसे बड़ी गर्ज़ क्या है, कि हम यह देखें कि जो नक्शा, जो रस्ता, जो तरीका या जो तालीम उन्होंने हमको दी थी, उसमें हम आज कितने कामयाब हो चुके हैं। वैसे तो याद रखो सिख को हर रोज़ ही मनाना चाहिये यह दिन, देखना यह है कि पिछले साल भी आपने मनाया था ना जन्म दिन, आज भी मना रहे हो। एक साल में आपकी क्या तरक्की हुई है ? कहां तक आप पहुंचे हो ? आगे से तुम बेहतर हो या क्या गति है ? देखने की यह बात है। हर पहलू से, इखलाकी लिहाज से, और आत्मिक लिहाज से अगर आपका सदाचारी जीवन जो है, आगे से बेहतर है, कोई तुम्हारा बुरा सोचता है और तुम उसका बुरा नहीं सोचते, कोई तुम्हें गाली निकालता है और उसका जवाब तुम प्यार से देते हो, आप में काम के वेग आगे बेअखत्यार चलते थे, अब वह नहीं चलते। आगे ज़ोम था दिल में, अहंकार था 'मेरे जैसा कौन है', अब तुम समझते हो सब मेरे जैसे हैं बल्कि सब मेरे से अच्छे हैं। समझे ! अगर यह हालत है, इख़लाकी तौर पर कुछ तरक्की हो गई। और आत्मिक लिहाज से, आगे आपकी आत्मा पिण्ड को छोड़ती थी, ज्योति को देखती थी, गुरू को मिलती थी, बातचीत करती थी, और अगले मण्डलों में सफ़र करती थी, आज उससे ज्यादा सफ़र हो रहा है ? यह देखने की बात है। इसका हर एक बीबी और मर्द अपनी अपनी जगह, अपने आपको जवाब दो। अगर तो आपकी तरक्की हो रही है, तब तो आपको आज का दिन मनाना सफ़ल, मुबारिक है। और अगर आप यह देख रहे हैं, आगे से अब कुछ तनज़ली (अवनति) हो रही है, तो फिर क्या करना चाहिये ? पछताना चाहिये। दिल से, जबान

से नहीं। दिल से पछताओगे तो आज ही से कुछ करने लग जाओगे। समझे ! हम लोगों में एक ही बीमारी है। अगर उसका आप भाई बहनें कुछ कर लें तो यह सब चीजें ठीक हो सकती हैं। वह क्या है ? कहना मानो, कहना मानो। आप कहना नहीं मानते। हम उतना ही मानते हैं जितना कि हमारा मन उसको तसलीम करता है, बाकी नहीं। तो सब महापुरूषों ने इसी बात पर जोर दिया है कि जब तुम गुरू के घर में जन्म ले लो, उसके घर जन्म लेने का क्या मतलब है, उसके चरणों में आ गये, जिस रस्ते पर उसने एक नया जीवन बखशा, पिण्ड से ऊपर जाने का रस्ता दे दिया, यह एक नया जीवन है। यह पैदा होना है गुरू के घर में। उस दिन के बाद वह जो वचन कहे उस पर फूल चढ़ाने लग जायें। तो अगर हम कहना मान लें तो काम बन जाये। क्या कहना है आप बतायें, ज़ाति गर्ज तो किसी महापुरूष की होती नहीं, उसको प्रभु खुद देता है, अपनी खाता है। जो किसी का मोहताज नहीं है वह तुम्हारी बेहतरी सोचेगा। जिसको गर्ज है वह अपनी गर्ज से कई बातें बनायेगा। जिसको अपना जाती गर्ज उसमें कोई शामिल नहीं, वह लाग़र्ज होगा। पहली बात। वह यह चाहता है कि मुझे एक चीज मिली है गुरू की कृपा से, जो लोग ख़ाहिशमन्द (इच्छुक) हैं, जिनको मनुष्य जीवन भागों से मिला है, उनको भी उससे फैज़ (परमार्थ लाभ) मिल जाये। बस। उसकी यही गर्ज है। वह क्या कहता है ? कि मनुष्य जीवन भागों से मिला है, इसमें सबसे बड़ा काम आपका प्रभु से मिलना है। समझे ! अगर यह तुम काम कर लो, आना जाना खत्म हो जाये, भटक जाती रहे, हमेशा के सुख को पा जाओ। अपना जीवन भी सुखी हो, लोग तुमको देखे जो, उनका जीवन भी सुखी हो। उस्ताद हो, उसको एक कलास दी जाये कि इनको तुमने पढ़ाना है। वह पैसे भी न लेता हो। चलो, पैसे का झगड़ा हो तो भी कोई बात नहीं। पैसा भी न लेता हो, हमदर्दी (शुभचिन्तक) हो, वह दिन रात कोशिश करता हो, लड़के सारे ही पास हो जायें, सिरदर्दी करता है, अपने सुख आराम को छोड़ता है। जो बच्चे उसका कहना मानते हैं उन पर दिली खुशी है, जो बच्चा कहना न माने उसे प्यार से भी समझाता है, बार बार सिरदर्दी मोल लेता है। किसलिये ? कि वह पास हो जायें, जितनी जल्दी लड़के पास हो जायें, उतनी उसकी जिम्मेदारी खत्म। तो आपको यही कहा जाता है, कि जीवन नेक पाक और सदाचारी बनाओ। पहली बात। सादा जीवन रखो। जितना जीवन बनावट का बनाओगे, उतनी ही भड़क आयेगी। महापुरूषों के जीवन से एक बड़ा भारी सबक जो हमको मिलता है वह यही है

कि उनका सादा जीवन होता है।

स्वामी विवेकानन्द जी गये रामाकृष्ण परमहंस को मिलने के लिये, तो आपको पता है आज कल साधु खास तरीके से रहते, खास किसम का लिबास, खास किसम का चलना फिरना, बातचीत करना, बाहरी आडम्बर बनाकर रहते हैं। जो अनुभवी पुरूष हैं, वह सादा जीवन रखते हैं। उनके पास आधी रात जाओ तो भी वही जीवन है। दिन को जाओ तो भी वही जीवन है। कोई भड़क नहीं, कोई Show नहीं, दिखलावा नहीं, बन ठनकर नहीं आते। सादा जीवन है। यह पहला सबक हमको मिलता है। जब वह उनके पास गये तो वह एक धोती बान्धे, एक कुर्ता पहने हुये सिर से नंगे फिर रहे थे। हमारे हजूर थे। सफाई थी, मगर कितनी सादगी थी ! समझे। तो सादा जीवन कितना बनाया, देखा। पहले देखो। यह चीजें हैं जो हमारे रस्ते में रूकावट बन जाती हैं। जितनी कम जरूरियात (आवश्यकतायें) आपकी होंगीं, उतने ही तुम सुखी होंगे। तो पहला सबक महापुरूष क्या देते हैं, कि तुम सादा जीवन रखो। समझे ! High Thinking (ऊंचे विचार) हों। जीवन सादा हो, मगर सोच विचार ऊंचा हो। गुज़ारे के लिये, देखो कपड़ा तन ढांकने के लिये है ? हम कपड़े के लिये नहीं बने। कोई इतर है कि नहीं कि सेजों पर जाना है माफ़ करना ! कपड़ा तन ढांपने के लिये चाहिये। ऐसा कपड़ा बनाओ जो तुम्हारी आमदन के मुताबिक हो। यह पहली बात है याद रखो। इस तरफ हम लोग तवज्जो नहीं देते, इसलिये बहुत लोग दुखी हैं। खर्च बढ़ा रखे हैं। ज्यादातर खर्च कपड़ों में हैं। दूसरा Item आता है खाने का। कोई आदमी जो गरीब से गरीब भी होगा तो भी उसके पास दो चार दस साड़ियां होंगी, तो चार सूट होंगे। बाबू जब मर जाते हैं, तो मुआफ करना पीछे दो चार सूट ही निकलते हैं। जब अपना जीवन सादा नहीं, तुमने अपनी आमदन से ख़र्च को बढ़ा रखा है, तो नतीजा क्या होगा ? दो ही बातें होंगी। या तो किसी से मांगोगे या किसी की चोरी करोगे या किसी का गला काटोगे। समझे ! हाथ फैलाये रखोगे। मोहताजी सबसे बड़ा गुनाह है।

तो अपनी चादर में अपने पांव फैलाओ। सूखी रोटी खा लो, रात को कर्जे में सोने के बजाये भूखे सो रहना अच्छा। यह असूल बना लो। जिन्दगी में खर्च तभी कम होंगे। बच्चे हैं, फ़िजूलखर्ची करते हैं। कपड़े पहने, हार श्रृंगार किये, यह सब फजूल हैं। हिन्दोस्तान में कई लाख रूपया हर साल सिर्फ टायलेट पर खर्च होता है। यह लाखों रूपये किसी और काम आ सकते हैं। तन को ढांको, ऐसा ढांको जिसमें जब बनावट

करते हो ना अपने तन की, तो अहंकार आता है, ओहो मेरे जैसा कौन है ? इसी को तो तोड़ना था। जिसम की बनावट में ही लगे रहे, बाहरी शकल थी, बहुत अच्छी बनाई, अन्तर में अपने आपकी तरफ तवज्जो जाने को वक्त ही नहीं मिलता। तो पहली बात है, सादा जीवन रखो। अपने खर्च अपनी आमदन से कम करो। यह असूल याद रखो।

मैं अपने जीवन में बताऊं, एक बार ऐसा मौका आया मेरे जीवन में, यह 1912 ई. का जिकर है, मेरे पास चार पैसे रह गये, और पांच छह दिन रह गये। ख्याल आया कि किसी से मांग लो एक रूपया। उन दिनों एक रूपये की बड़ी कीमत थी। गुज़ारा अच्छा था। ख्याल आया अच्छा भई आज अगर मांगना शुरू किया, देने को लोग दे देंगे, मेरी आदत पड़ जायेगी। चलो दो चार दिन मांग कर गुजारा कर लो। समझे ! मैंने नहीं किया। चार पैसे में छह दिन गुजारे। उसका नतीजा क्या है ? आज तक कभी हाथ फैलाने का मौका नहीं मिला। लोग कहते रहे यह सादा है, यह दुनियादार नहीं, यह साधु है। अरे भई, ''गुरूमुख बाहरों भोला ते अन्दरों सयाना।'' अपने काम के पक्के रहो। तुम अपने काम को तो भूल चुके हो जो करना था। बाहिरी बनावटों में अपना जीवन जाया (नष्ट) कर रहे हो। यह पहला सबक है हजूर के जीवन से हमको जो मिलता है। सादगी और प्यार करो। सादा रहना, सादा खुराक। दूसरी टायलेट और कपड़ों पर जितना खर्च यहां होता है मुआफ़ करना, जिनके गुज़ारे नहीं होते उनकी यही Item ख़राब है। ठंडे दिल से बिचारो। आप कहेंगे आप तो परमार्थ के लिये बैठे थे, यह क्या कहने लग गये ? अरे भई परमार्थ में जो चीजें मददगार हैं उनकी तरफ़ हो। जो मोहताज है, हाय हाय करता है, खर्चा पूरा होता नहीं, वह भजन कैसे करेगा ? फिर यह कहा कि —

खट घाल किछ हत्थों दे, नानक राह पछाणें से।

कमाओ। कुछ बांटकर खाना सीखो। वही परमार्थ के रस्ते में जा सकता है। पहली बात। आप समझे। महापुरूष क्या चाहते हैं ? सादा जीवन, दिखावे का जीवन नहीं। हार श्रृंगार को छोड़ो। हजूर क्या कहते थे, ज्यादातर बीबियों से कहा करते थे, भई तुम यहां डेरे में आते हो तो लड़कियां बनकर आओ, बहुऐं बनकर मन आओ। यह थोड़े से लफ्ज़ थे। महापुरूष जो बयान करते हैं उसका कुछ खास मतलब होता है। जितनी भड़क ज्यादा, जितनी बनावट ज्यादा, उतने विषय विकार ज्यादा। सादा

जीवन हो, कपड़े पहने हुए तुम जा रहे हो, कोई तुम्हारी तरफ़ देखता नहीं है। जब बन ठनकर जाओ, सबकी नज़र तुम पर है। तो पहला सबक वह यह चाहते हैं कि सादा जीवन बनाओ। एक कान से सुनकर दूसरे से निकालने वाली बात मैं नहीं कह रहा हूं। बात पल्ले बान्धों। सादा जीवन आज से ही बना लो। दूसरा, खुराक सादा रखो। Simple Living and High Thingking. खुराक इन्सान के लिये बनी है। समझे ! इन्सान खुराक के लिये नहीं बना, याद रखो। जिसम को पालो। यह हरि मन्दिर है , और महापुरूषों ने यह तालीम दी है कि इसकी पालो।

घट बसे चरणानारबिन्द रसना जपे गोपाल।
नानक तिस ही कारणें इस देही को पाल॥

तुम्हारे घट में प्रभु के चरणों का निवास हो, उसके देखने वाले बनो, देखकर उसके गुनावाद गाने वाले बनो, इसलिये इसको पालो। तो खाना मैंने अर्ज किया, जिसम के पालने के लिये है। तुम खाने के लिये पैदा नहीं हुये। विष्णु भगवान के पास जाकर अन्न देवता ने शिकायत की कि महाराज लोग मुझे बड़ा खाते हैं, मैं बड़ा तंग हूं। कहने लगे भई ऐसा कर, जो तुमको जरूरत से ज्यादा खाये तुम उसको खा जाओ। देख लो, जो बहुत खाते हैं, उनका मेदा (पेट) ही हज़म नहीं करता, खाने को जी नहीं करता। जरूरत के वक्त, भूख लगने पर खाओ। समझे ! इतना खाओ जितनी भूख लगी है। उससे भी कम खाओ। शाम को फिर कम खाओ। जो खाना हज़म हो जाये वह बीमारियां क्यों पैदा करेगा ? जितनी शिकायतें आपकी है, हमसे बैठा नहीं जाता, हमें आलस आता है, हमें वक्त पर नींद नहीं खुलती, यह सब मेहरबानियां पेट की है।

महर्षि शिवब्रतलाल जी थे। उनके पास एक आदमी गया। एक दिन में कई आदमी गये और कई किसम के सवाल किये। सबका एक ही जवाब दिया। एक आया महाराज मेरा शरीर बड़ा भारी रहता है। कहने लगे पेट की तरफ़ ध्यान दो। दूसरा आया कि महाराज मुझे ग़नूदगी रहती है, नींद नहीं खुलती है। कहने लगे, पेट की तरफ़ ध्यान दो। तीसरा आया कि मेरा मन बहुत दौड़ता रहता है, यकसूई (एकाग्रता) नहीं होती। कहते हैं, पेट की तरफ़ ध्यान दो। पेट एक बावरचीखाना है भई। इसमें साफ़ सुथरी चीज़ डालो। निकाल लो। जो सारी निकल गई, तो मेदा ठीक, फुरतीला जीवन है,

चौबीस घन्टे काम करते रहो। जो सारी चीज़ हजम नहीं हुई, ज्यादा खाते हो, याद रखो लोग भूख से कम मरते हैं, ज्यादा खाने से ज्यादा मरते हैं। हिसाब लगाकर देखो। हज़रत मुहम्मद साहब के मुतल्लिक ज़िकर आता है कि उनके पास चालीस आदमी जो पैरोकार (अनुयायी) थे मिले, तो एक आदमी ने देखा कि भई इनके साथ आदमी हैं चालीस, उनके साथ एक हकीम साहब लगा दिये कि भई इनकी सेवा के काम आयेगा। छह महीने गुजर गये कोई बीमार नहीं हुआ तो वह आया, या हज़रत ! मैं तो यहां इसीलिये रहा था कि कभी किसी को सेवा की जरूरत पड़े, मगर आपको तो मेरी जरूरत ही नहीं। कहने लगे, देखो भई मेरा जो असूल है, मैंने जो पेश किया, अगर उस पर यह कारबन्द रहे तो इनको किसी हकीम की जरूरत नहीं। वह क्या है ? भूख से दो लुकमे (ग्रास) कम खाओ। भूख हो तो छोड़ दो। दिन को काम करो, शाम को फिर खाओ। दिन भर काम करो। जीवन नेक पाक और सादा रखो, ज़फाकश (श्रमजीवी) बनो। ऐसे पुरूष को कोई हकीम की जरूरत नहीं। आपके खर्च कम हो जायेंगे। यह चीजें मैं क्यों अर्ज कर रहा हूं भई। हैं चीजें बड़ी Simple, सादा। इनमें बड़ा भारी वजन है। हम इस तरफ़, छोटी चीजों पर तवज्जो नहीं देते, इसलिये बड़ी चीजें मिलती नहीं। अगर इस तरफ तवज्जो दो जो मैंने पेश की हैं आपको, खाना और पहनना, अगर इस की तरफ आप तवज्जो दोगे, आपको आधे से ज्यादा छुट्टी हो जायेगी बाहरी तरफ से। याद रखो, जो ग़जा (खुराक) हजम होती है, वही ताकत देती है। जो ग़जा हजम नहीं होती वह बीमारियां पैदा करती है। यह बीमारियां जो हैं इनका कानून वैद्य हकीम जानें, मगर जो मोटी बातें Character, चालचलन, ब्रह्मचर्य की रक्षा है। तीसरी चीज ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है। इसका पतन करना मौत के बराबर है। Chastity is life and sexuality is death. समझे ! यह ताकत बड़ी कीमती चीज है भई। हिसाबदानों ने हिसाब लगाया है कि चालीस कतरे घी के एक कतरा खून का बनता है। चालीस कतरे खून के मिलकर एक कतरा चरबी का बनता है। चरबी से आगे मिज बनती है। और ऐसे ही चालीस कतरे मिज को मिलाकर एक कतरा इस ताकत का बनता है। कितनी कीमती चीज है ? जिसका ब्रह्मचर्य सही है, उसका दिल दिमाग सही है। समझे ! उसको जब्त करने को ताकत है। उससे परे फिर एक और चीज बनती है। अगर वह काफी हो, जिसम को पालने के लिये, तो उससे एक और ताकत बनती है, जिसको ओजस कहते हैं। ओजस से आदमी हद से बेहद में जाने के

काबिल हो जाता है। बताओ कितनी भारी कीमती चीज है ! पता है आज आपको, हमारे घरों की हालत बहुत अधोगति को जा चुकी है। ताना-पेटा बिगड़ चुका है। जीवन बहुत गन्दे हैं। रोज दिन के वाकेयात (घटनायें) हमें क्या बतलाते हैं ? जवान लड़कियां घर को छोड़कर भाग जाती हैं। कसूर लड़कियों का ही नहीं, मरदों का भी है। जीवन खराब हो चुका है। मेरी उमर के भाई जो यहां बैठें होंगे, इस बात के गवाह होंगे। जब छोटे हम थे, हमारी भाई बहन पैदा होते थे, हम पूछते थे, यह कहां से आये ? तो हमको कहा जाता था कि यह दाई दे गई है, दाई। हम मान लेते थे। यह इस बात का सबूत है कि हमारे माता पिता के जीवन इतने पवित्र थे कि हमें कभी ख्याल भी नहीं आता था कि इस बात से है। आज छोटे बच्चे से पूछो वह सब कुछ बतलाता है। बच्चे नकल करते हैं। समझे। घरों से निकलकर आगे स्कूलों की हालत और अधोगति को जा चुकी है। समझे ! रहे सहे वहां बिगड़ जाते हैं। फिर गुरू बिचारे क्या करें आप बतायें।

गुरू बिचारा क्या करे जो सिखन में चूक।
अन्धे एक न लागई ज्यों बांस बजाई फूक।

मेरा लड़का था। कालेज में दाखिल हुआ। वहां से एक दिन आया घर। कहने लगा, बाबू जी। मैंने कहा हां। कहने लगा एक प्रोफेसर ने मुझे एक बात कही है। क्या भाई ? उसने मुझसे पूछा Have you ever loved ? क्या उसको शर्म नहीं आई ? जिस Environment (वातावरण) से इन्सान Develop करता है उसके लिये तो नई बात है ना। नावल ही पढ़ाये जाते हैं स्कूलों, कालेजों में। बताओ। यह मैं इसलिये खोलकर बयान कर रहा हूं कि हमारे घरों की हालत क्या बन रही है। यह याद रखो जो घर के - पंजाबी में मिसाल है कि जो पोतड़ो के बिगड़े हुये होते हैं, वह कभी संवरते नहीं। अगर घर में हमारा जीवन नेक पाक रहे तो बाहर भी होगा।

मैं अमेरिका में गया। वहां पर मुझे Television पर बुलाया गया। वहां जो मर्जी है कोई सवाल करे। कोई बन्दिश नहीं ना। कहने लगे, Look here, I am your naughty boy. कि मैं तुम्हारा बिलकुल नाफ़रमाबरदार (आज्ञा न मानने वाला) बड़ा नटखट बच्चा हूं। आप मुझे यह बताओ कि मैं एक Naughty Boy हूं, बड़ा खराब, तुम मुझे कैसे ठीक करोगे ? मैंने कहा, By example. I will be an example.

Example is better than precept. मैंने कहा मैं नमूना बनूंगा। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि जो अपनी औलाद को ठीक करना चाहते हैं वह आप नमूना बनें। यह छोटी छोटी बातें हैं, इनका असर बड़ा बुरा है। यह जितने गड़बड़ें रोज दिन अखबारों में और घरों घरों में देखने में आ रही हैं यह इसी का रोना है। जिनकी शादी नहीं हुई वह ब्रह्मचार्य की पूर्ण रक्षा रखें भई। जिनकी शादी हो चुकी है वह शास्त्र मर्यादा के मुताबिक जीवन बनाने का यत्न करें। गृहस्थ आश्रम, बड़ा ऊंचा आश्रम है। समझे ! जितने ऋषि, मुनि, महात्मा आये, वह ज्यादातर गृहस्थ आश्रम में आये हैं। त्यागी महात्मा तो कोई कोई आया है। मगर उनका जीवन वह नहीं था जो हम लोगों ने बना रखा है। समझे ! हमने यही समझ रखा है कि यह एक विषय विकारों की मशीन है। चलो। दो चार पहले ही पैदा कर लिये बच्चे। उन्हीं को पालना। जीवन बर्बाद कर लिया। शास्त्र मर्यादा क्या कहती है ? कि यह ताकत बड़ी अनमोल है। शादी एक जीवन साथी को साथ लेना है। दुख में, सुख में, गरीबी में, अमीरी में, दुनियाँ की यात्रा (एक एक दो ग्यारह) मिलकर सुख से व्यतीत हो इसलिये, और उस आदर्श को पाने के लिये मददगार चीज बने। एक चीज, एक फ़र्ज गृहस्थ आश्रम में बच्चों का पैदा होना भी है। वह क्या है ? एक फर्ज ! अब नहीं, पुरातन जमानों में आप देखें जब एक बच्चा हो जाये तो जंगलों की राह लेते थे। क्या करने को ? अरे भई अनुभव पाने को। पा चुकते थे तो फिर वह सन्यास आश्रम धारण करते थे। गृहस्थ आश्रम यह है। ब्रह्मचर्य की रक्षा।

गांधीजी ने क्या फरमाया। कहने लगे जब मुझे होश आई, ब्रह्मचर्य की रक्षा मैंने धारण की, मैं क्या कुछ बन गया। अगर मुझे पहले होश आ जाती तो मालूम नहीं मैं क्या कुछ और बन जाता। तो सात्विक जीवन, सदाचारी जीवन के साथ ब्रह्मचर्य की रक्षा निहायत जरूरी है। यह है जमीन की तैयारी। फिर इसके बाद आगे कदम चलना है। जिसका जीवन ही ठीक नहीं अरे भई वह क्या करेगा ? तो इसलिये नेक पाक सदाचारी जीवन निहायत जरूरी है। तो महात्मा आपको छोटी छोटी बातें बताते हैं कि यहां से शुरू होती हैं। पहली बातें। आगे वह क्या कहते हैं ? अरे भई मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है। तुम्हारे अन्तर वह परमात्मा ज्योतिस्वरूप बिराजमान है, घट-घट बासी है, जर्रे-जर्रे में समा रहा है। वह आंख बनाओ, जिससे वह नजर आता है। तो आप ने आज के दिन यह देखना है कि पिछले साल से जो आप की हालत बेहतर

हो रही है हर एक पहलू से तो मुबारक है जीवन दिन आज का मनाना, अगर नहीं है, कम से कम पछताना जरूरी है। आगे के लिये जीवन को बनाओ। इस सब कुछ कहने का, एक लफ्ज़ जो आप धारण कर लोगे तो काम बन जायेगा। वह क्या, कि कहना मानो। वह यह कहते हैं कि जहां तुम जिसम को खुराक दे रहे हो वहां, तुम आत्मा हो देहधारी, आत्मा को भी खुराक दो। बाहिरी खाने पीने से जिसम ठीक बनेगा, आत्मा को खुराक देने से आत्मा बलवान बनेगी। हम लोग जिसम को बनाते रहे, बुद्धि के लिहाज से अकली पहलवान भी बन गये, मगर आत्मा के लिहाज से लागर (हीन) और कमज़ोर हो रहे हैं। आत्मा की खुराक क्या है ? परमात्मा। आत्म चेतन है। तुम आत्मा देह-धारी, चेतनस्वरूप हो ना। तो चेतनस्वरूप की खुराक तो चेतन ही है, Water of Life कहो, Bread of Life कहो, आत्मा का परिपूर्ण परमात्मा से Contact होना (जुड़ना) यह है आत्मा की खुराक। कहां है ? यह तुम्हारे अन्तर में है। बस। कहते हैं यहां चौबीस घंटे हैं। तुम दुनियाँ के काम भी करो मगर यह निहायत जरूरी काम है, इसकी तरफ़ भी तवज्जो दो।

आप देख लो हम दुनियाँ में क्या करते हैं। कहीं चोरी हो जाये, जान बच जाये, खतरा हो कहते हैं, कोई फिकर नहीं, चोरी हो गई, मैं बच गया। कहीं Accident (दुर्घटना) हो जाये, टांग बाजू टूट जायें, कहते हैं कोई फिकर नहीं मैं बच गया। अरे भई बाहर की चीजों से जिसम ज्यादा कीमती है। जिसम से ज्यादा एक और ज्यादा कीमती चीज है, जो घट घट में बैठी है। वह 'मैं' हूं। तो हम दुनियाँ में कर क्या रहे हैं आप देखिये। जिसम को पालने ही के लिये सारे सामान इकट्ठे कर रहे हैं, या जिसम के बनाने के लिये या बुद्धि के। अपने आपकी तरफ तवज्जो नहीं देते जो सबसे ज्यादा कीमती चीज है। और वह कीमती चीज कहां है ? इस जिसम रूपी डिब्बे में बन्द है। इसको खोलने की जरूरत है या अन्तरमुख होने की जरूरत है। Tapping Inside करने (अन्तरमुख होने) से वह चीज वहीं मिल जाती है, जो आगे ही मौजूद है हममें। उसका जिकर ग्रन्थों पोथियों में है। उसके गुणावाद धर्मस्थानों में गाये जाते हैं।

तो एक अगर कहना मान जाओ, क्राईस्ट ने कहा, If ye love me keep my commandments. अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरा कहना मानो। हम कहना नहीं मानते। बस यही बीमारी है।

इरादे हैं तो मन्ज़िल के मगर चलना नहीं आता।

एक कदम हम नहीं उठाते समझे !

हमें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता।

भाई गुरूदास जी ने कहा —

पूछत है पथिक केते मगर न धरे पग। प्रीतम के देस कैसे बातन से जाईये॥

पूछने वाले बड़े, महाराज ! क्या करें, क्या न करें यह है, वह है। मगर कदम उस रस्ते पर उठाना नहीं चाहते। कहते हैं उस प्रीतम के देश में बातों से कैंसे पहुंचोगे ? तो एक बात है, सब महापुरूषों ने एक ही बात पर जोर दिया है, कि जब महापुरूष के पास जाओ, उसका कहना मानो। वह क्या कहता है ? वह मैंने अभी अर्ज किया कि भई सादा जीवन बनाओ। सादा खुराक, सादा रहनी, इख़लाक, सदाचारी जीवन और प्रभु की याद। किसी समाज में रहो, तुम्हारी कल्याण है । तो जो कुछ आपने आज देखा , बयान किया, अभी ही जिनको Experiences (अनुभव) हो रहे हैं वह मुबारिक हैं। जिनको कम हो रहे हैं वह और वक्त ज्यादा दें। मगर जीवन का ख्याल रखें। Self-Introspection (अपने आप पर नज़र रखें) आपको इसीलिये डायरी तजवीज़ की गई। डायरी रखना Self-Introspection का करना बड़ी भारी बरकत की चीज़ है। मैंने अपने जीवन में As a student (विद्यार्थी) डायरी रखी है। मैं जानता हूं इसकी बड़ी भारी कीमत है। खाली जीवन की पड़ताल रखो। किसी का बुरा चितवन न हो, ख्याल में भी। सत्य को धारण करो, ब्रह्मचर्य को, ख्यालात नेक-पाक और पवित्र हों। सबसे प्यार और Selfless Service (निश्काम सेवा) हो। अगर जीवन में खाली यह धारण कर लो तो भी तुम्हारी अन्तर दिव्य दृष्टि हो जाये। पानी से लेहरे न उठें, मन में वेग न उठें काम के, क्रोध के, तो उसमें Reflection (अकस) हकीकत का पड़ेगा कि नहीं ? अगर परमार्थ का, आत्मिक रंग चढ़ जाये तो क्या कहना ? जितना कपड़ा साफ होगा उतना ही रंग आला चढ़ेगा। मैले कपड़े पर अगर रंग चढ़ाओगे तो बड़ा बुरा बड़ा मुद्दा मालूम होगा। तो आज के दिन फिर मैं आपको यही अर्ज करूंगा कि एक कहना मानना शुरू कर दो। वह कहना मानना क्या है, उसको Digest (खुलासा) करके थोड़े लफ्जों में डायरी के Form (फॉर्म) में आपको पेश किया गया है। ''अहिंसा परमो धर्म।'' अहिंसा परम धर्म है। मन करके, वचन करके और कर्म करके।

जै तोए पिया मिलन दी सिक । तां हिया न ठाई केही दा ॥

अगर तुम प्रभु को पाना चाहते हो तो किसी का दिल न दुखाओ । हाफ़िज़ साहब ने तो यहां तक कहा, फरमाते हैं कि भई तुम ''मय बिखुर'' बेशक मय (शराब) पीलो । है तो बुरी चीज़ कहते हैं, इससे बुरी चीजें और भी हैं । ''मुसहिफ़ बिसोज़'' कुरानशरीफ़ और सब धर्म पुस्तकों को आग लगा दो । है बड़ी बुरी चीज़, कहते हैं इससे भी और बुरी चीज है एक, ''व आतिश दर काबा जन'' खुदा के घर में आग भी लगा दो । बड़ी बुरी बात है, धर्मस्थानों को आग लगानी, कहते हैं इससे भी एक और बुरी चीज है, ''साकने बुतख़ाना बाश'' । कहते हैं ऐसे भी बन जाओ, कहते हैं इससे भी और एक बुरी बात है, क्या ?

हरचे ख़ाही कुन वले मर्दमाज़ारी मकुन ।

सौ सयाने एक ही मत । तो ''अहिंसा परमो धर्म:'' मन करके, वचन करके, कर्म करके, यह डायरी में आपको दी गई है । रोज़ के रोज़ नोट करो । लिहाज़ नहीं करो Like Strict and hard task master. बनो । दूसरे सत्य को धारण करो । झूठ फरेब, दग़ाबाजी, रियाकारी, कपट, चोरी, कोई देखता है या नहीं, इसका कोई सवाल नहीं, वह ताकत जो बैठी है, तुम्हारे अन्तर देख रही है । आपके पास पांच साल का बच्चा बैठा हो, हमारे हजूर फरमाते थे, तो उसके सामने हम कोई पाप नहीं करते । हम यह देख रहे हैं वह परमात्मा, वह अनुभवी पूर्ण पुरूष जो हमारे घट-घट में बैठा है, हर एक के अन्तर, वह God Power देख रही है, तो हम कोई पाप करेंगे ? जब जब महापुरूष आये, पहली बात उन्होंने यही सिखाई —

पूरे गुरू का सुन उपदेश । पारब्रह्म निकट कर पेख ॥

प्रभु को हाजर नाजर समझो, फिर पाप कौन करेगा ? तीसरे ब्रह्मचर्य की रक्षा, मन करके भी ख्याल अपवित्र न हो, जबान करके किसी से कड़वा बोल न बोलो । और सबके अन्तर परमात्मा है, किसी से नफ़रत न करो । परमात्मा से प्यार करते हो, परमात्मा घट-घट बासी है, सबसे प्यार करो । Christ ने कहा, वह लोग जो यह कहते हैं कि We Love God and hate their brother, they are liars. वह झूठे सब लोग हैं । तो हम जान लें कि घट-घट में वही है, तो सबका अदब कुदरती बात है । और Selfless सेवा, निशकाम, तन करके धन करके, यह है जीवन की Introspection (पड़ताल) जिसको रोज़-रोज़ करो । जो कमजोरी है तुम उसको

निकालते चलो। साथ साथ अभ्यास करो। जो Higher Contact आपको ज्योति का और श्रुति का दिया जाता है, पहले दिन ही, उसको रोज़-रोज़ अभ्यास से बढ़ाओ। Take heed that the light that is in you be not darkness. अर्थात् वह रोशनी, ज्योति जो तुमको दी गई है पूंजी, उस पर स्याही का पर्दा न फिरे। इन कामों से स्याही का पर्दा फिर जाता है। तो यह है कहना मानना भई। कहना मानना सीख लो, काम बन जायेगा। इसलिये महापुरूषों ने कहा —

मन के कहे चलो मत कोई।

जो अनुभवी पुरूष तुमको कहता है उसकी पालना करो। और वह यह कुछ कहता है। तो आज के दिन आप अपने अपने दिल में समझ लो कि जिस महापुरूष की याद में बैठे हो, उसकी यही तालीम थी। यही तालीम सब महापुरूषों की रही है। तरीका बयान अपना रहता है, नफसे मजमून वही है। इसको बनाओ।

परमेश्वर ते भुलियां व्यापन सबे रोग। बेमुख होये राम ते लगन जन्म बियोग॥

प्रभु की याद, सच्चे दिल से याद हो, सब दुखों का वाहिद (एकमात्र) इलाज है।

जे को मुशकिल अत बणें ढोई कोई न दे। लागू होय दुशमनां साक भी भज खले॥
भज्ज सबे आसरे चुके सब असराओ। चित्त आवे उस पारब्रह्म लगे न ताती वाओ॥

तो सच्चे दिल से उसकी याद सब दुखों का वाहिद इलाज है। और सच्चे दिल की याद कब बनेगी ? जिसको देखा ही नहीं, जब देखा नहीं तो —

बिन देखे कैसे को ध्यान।

तो देखने के लिये वह आंख बननी चाहिये जिससे वह नजर आता है।

बिबायद चशमे सर माशूक दीदन। कलामश रा बगोशे खुद शुनींदन॥

वह आंख कब बनती है ? अब हवा में हमें कुछ भी नहीं नजर आ रहा है। क्या हवा में कुछ नहीं है ? है तो सही, सूक्षम है। हमारी आंख स्थूल है। जब तक हमारी आंख इतनी सूक्षम न बन जाये जितनी हवा, या हवा में जो कुछ है, इतना स्थूल न हो जाये, हमारी आंख के Level में न आये, हम नहीं देख सकते। अगर Microscope (छोटी चीज़ को बड़ा करके दिखाने वाला यंत्र) के आले से आप इसको देखेंगे, जो अब भी हैं। तो परमात्मा है अति सूक्षम, लेकिन उसको देखना जो —

एवड ऊंचा होवे को। तिस ऊंचे को जाने सो॥

जितने लेवल पर वह है, अति सुक्षम, उतने ही हम होंगे तो हम उसका अनुभव कर सकते हैं। तो उतने सुक्षम होने के लिये हमें क्या करना होगा ? बाहर से हटना, फैलाव से यकसूई में आना। योग के मायने हैं, युज से निकलता है, जुड़ने का नाम है। किसका ? आत्मा का परमात्मा से। इसके कई तरीके हैं, कई सहल हैं, कई लम्बें हैं। अरे भई Natural और सहज जो है, वह हर कोई कर सकता है। तो सुरत का खेल सब योगों में काम करता है। सुरत का Control है। जिसने सुरत को किसी तरीके से यकसू कर दिया उसका काम बन गया। तो वह आंख बड़ी चीज़ है। वह दिव्य चक्षु सबके अन्तर है। जब तक वह खुलती नहीं, उसका अनुभव मिलता नहीं, लगातार याद और ध्यान बनता नहीं है। तो प्रेम उसी का हो सकता है जिसका रस मिला हो, जिससे ताल्लुक आया हो। नहीं तो प्रेम कहां है ? तो उसके देखने के बगैर शान्ति नहीं है, देखने के लिये वह आंख बननी चाहिये जिससे वह नजर आता है। योग के मायने जुड़ने के हैं। कब ? जब आत्मा बाहर सब झमेलों से आज़ाद होगी, फिर। उसके अन्तर वह देखने की शक्ति है। आंख खुल जाती है जिससे वह नजर आता है। उसको Single Eye कहा, उसको दिव्य चक्षु कहा। समझे ! उसको सब महात्माओं ने अपनी अपनी जगह बयान किया। जब महापुरूष आते हैं दुनियाँ में, वह देखते हैं, कहते हैं, यह सारा जहान ही अन्धा है। वह कह गुज़रते हैं। समझे ! क्या सब अन्धे हैं ? बड़ा Sweeping Remark है। अन्धा कौन है इन्सान ?

अन्धे से न अखियन जिन मुख लोइन नांहि।
अन्धे से ही नानका जो खसमों कुथे जांहि॥

जिनकी आंख नहीं खुली देखने वाली, वह सब अन्धे हैं। यह आंख कब खुलती है ? जब आप की वृत्ति फैली हुई अर्न्तमुख हो। वहां अनुभव जागता है। तो बाहर से हटने का सवाल है। उसके लिये योग के साधन अनेकों बनाये। सब मुबारक हैं, अपनी अपनी जगह। कोई लम्बे हैं, कोई सहल हैं, कोई Natural हैं, कोई सहज और Natural हैं। और हर एक योग में सुरत ही काम करती है। तो सन्तों ने सुरत को Control करके Natural Way में, उससे जोड़ने का यतन किया है। वह आंख बनती है, उसमें सब कुछ नजर आता है। जब तक नजर न आये तब तक प्यार नहीं। सच्ची बात है।

तो सब महापुरूषों ने कहा, क्या यह आंख बन सकती है ? कहते हैं हां। कैसे बनती है ?

सो गुरूमुख देखे नैनी।

जो गुरूमुख हो, अनुभवी पुरूष, जिसने देखा है उसकी सोहबत में बैठो। उसका नाम कुछ रख लो। क्राईस्ट से पूछा गया, तुम्हारे पिता को कौन देखता है ? कहते हैं, उसका बच्चा ! कौन है ? यह सब अनुभवी पुरूष उसके बच्चे हैं। They are all Children of Light. और दूसरे कौन देख सकते हैं ? And others whom the son reveals. जिनको उसका बच्चा दिखाये। सोहबत संगत, एक चीज एक को आती है, वह दूसरों को देता है, इन्सान का उस्ताद इन्सान। पर कैसा इन्सान ? शकल इन्सानी हो मगर अन्तर से जुड़ा पड़ा हो। बाहर वह दुनियाँ से जुड़ा पड़ा हो, अन्तर प्रभु से जुड़ा पड़ा हो। उसके पास बैठो। वह आंख बनायेगा। तो Firsthand थोड़ा Experience दे दे वह उसको दिनों दिन बढ़ाओ। वह बढ़ता चला जायेगा। पढ़ा हो, अनपढ़ हो, उसके अनुभव को पाकर उसको हर एक जगह हाजर नाजर देखता है। तो देखने का सवाल है। दुनियाँ बगैर देखे गा बजा रही है।

जब देखा तो गावा। तो गावे का फल पावा ॥

देखकर गाना कुछ और चीज है, नहीं तो हीर रांझे के किस्से अनेकों लोग गाते चले जाते हैं, वह आनंद वह नशा, जो देखकर आता है वह बनता नहीं। तो देखे का मत और है। समझे ! जिसने देखा है, पहले देखने के बगैर न याद बनती है न कुछ। तो देखने ही के लिये, जिन महापुरूषों ने देखा है, उनका नाम कुछ रख लो, उनके पास बैठने से हमारी वह आंख बनती है जिससे वह नजर आता है। वह आंख कौन सी है ? सब महापुरूषों ने कहा —

नानक से अखड़ियां बेअन जिन डिसन्डो मापरी।

वह आंखें और हैं। यह चमड़े की आंखें नहीं। वह और आंख है। वह सबके अन्तर है, दिव्य चक्षु उसको कहा है, Third Eye और Single Eye, वह कैसे खुलती है ? जब बाहर से हट जाओ। बस। एक ही राज़ है। वृत्तियां फैलाव से हटें, अन्तर यकसूई होगी, वह दिव्श चक्षु खुल जायेगी। उससे अन्तर भी नजर आता है और बाहर भी। तो देखे के बगैर ध्यान नहीं बनता। देखे के बगैर भरोसा नहीं बनता। तो जो कुछ अपने

सच्चे दिल से याद हो, कुदरती बात है, जबानी जमा खर्च से हजारों दर्जे उसका असर ज्यादा है। जो दिल से आवाज निकले वही उसको पहुंचती है। अगर दिल दुखी है, पुकार करेगा तो उसको पहुंचेगी। आपको पता है, अभी द्रोपदी का वाकिया पेश किया गया, तो कहते हैं कि जब द्रोपदी ने भगवान से कहा कि महाराज मेरी साड़ी सिर से उतर गई थी, मेरी इज्जत तो उसी वक्त उतर गई, बाकी मैं बच रही, मगर आप पहले क्यों नहीं आये ? तो कहने लगे, भई तुमने किसको याद किया था ? कहने लगी द्वारिकाधीश कृष्ण को ! कहते हैं फिर उसे द्वारिका ही से आना था ना। मैं तो तेरी आत्मा की आत्मा था। अगर तुम उसको अन्तर में पुकार करो तो वह उसी वक्त पहुंच जायेगा। सिर पर कपड़ा उतरने की भी देर न रहे।

अरे भई भगवान को हाजर नाजर जानो, हाजर नाजर जानने के लिये वह आंख बननी चाहिये जिससे वह नजर आता है। जिनकी आंख बनी है उनकी सोहबत अख़त्यार करो, थोड़े से लफ्ज़ों में। मुबारक है वह इन्सान, हर समाज में, जिसकी आंख खुली है। उसकी सोहबत करो। समझे !

मर्दे हज्जी मर्दे हाजी रा तलब। ख्वाह हिन्दू, ख्वाह तुरको, ख्वाह अरब ॥

हज करने की ख्वाहिश है, किसी हाजी को पकड़ लो। समझे ! कौन हो ? कहते हैं, हिन्दू हो, तुर्क हो, अरबी हो, सिख हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, कोई सवाल नहीं। तो बड़े मनोहर वचन आपने सुने हैं, भई इनको दिल में बान्धो। सोहबत संगत ऐसी अखत्यार करो, जिन्होंने अनुभव किया है। यह काम न लेक्चरारों से होगा, न ग्रन्थाकारों से, न चातुरों से, न बातें बनाने वालों से न प्रोपेगेन्डा से। खुश्बू वह है जो बेअख़त्यार दीवारें फांद कर बाहर जाती है। जीवन हो, अपने आप नज़र आता है। ''जोईन्दा याबिन्दा'' वह परमात्मा सामान करता है, किसी न किसी मिले हुये को मिला देता है। वह उसको रास्ते पर डाल देता है। यह सब उस परमात्मा के हाथ में है। और उसके लिये इलाज, सच्ची याद, दिल से याद। जबान से याद आपकी कहीं नहीं पहुंचेगी। च्यूटी की आहट वह सबसे पहले सुनता है, हाथी की चिंघाड़ पीछे जाती है।

बाहर की याद ही ताजा नहीं हो रही, बल्कि सावन की बहार भी उसी का जलवा दे रही है। कई बार झुक झुककर आता है, फिर हट जाता है, जलवा दे कर फिर हटता है। तो मेरे अर्ज करने का मतलब क्या है, कि जब महापुरूष दुनियाँ में आते हैं ना, वह

समय प्रभु के मिलने का होता है।

सावन आया हे सखी कन्ते चित करे।

कि सावन भई दुनियाँ में आ गया है, अब अपने मालिक का ध्यान करो।

नानक झूर मरे दुहागणीं जिनां और ही नेह।

कौन लोग ? कहते हैं, ''दुहागणीं जिना और ही नेह।'' जिनका और और से प्यार बना है, वह तो झूर झूर कर मर जायेंगे। अरे भई अब सावन आया है, प्रभु से प्यार लगाओ। जब गुरू आये तब ही प्रभु से प्यार बनता है। मैंने अभी अर्ज किया था पहले कि जिसको देखा न हो, जिसका रस न मिला हो, उसका प्यार कहां ? समझे !

अब यह अनुभवी लोग कौन होते हैं ? सवाल यह है। हमारा प्यार उनसे कैसे बन सकता है ? हम उस प्रभु को देखने वाले कैसे बन सकते हैं ? यह एक सवाल है हमारे सामने, जो मनुष्य जीवन में जिसने हल कर लिया, उसका जीवन सफल हो गया। जिसका यह सवाल हल नहीं हुआ वह भटकता फिरता है, वह जीवन बरबाद कर जाता है। मुझे याद है फ्रांस में एक डाक्टर था, वह मरने लगा। बड़ा लायक डाक्टर था। तो बड़े बड़े डाक्टर उसके पास गये कि तुम अब मरने लगे हो, हमें कुछ अपनी जिन्दगी का तजरूबा दे जाओ। तो वह कहने लगा भाई कान खोलकर सुनो, जब तक दुनियाँ में तीन चीजें हैं, पानी, हवा और धूप (सूरज) इन तीनों चीजों के होते हुये इससे बढ़कर और किसी डॉक्टर की जरूरत नहीं। आप देखते हैं, पानी ही से सब सरसब्जी है, अगर पानी दरख्त की बुनियाद (जड़ों) में न जाये तो दरख्त सूख जाता है। ऊपर से पानी देने से काम नहीं बनता, अगर किसी दरख्त या बूटे को ऊपर से पानी दो, वह काला हो जायेगा। दो तीन दिन में सड़ जायेगा। अगर उसकी जड़ों में पानी दोगे, तो वह हरा भरा हो जायेगा और फ़ल भी लायेगा। तो इसी तरह मनुष्य जीवन पाकर अगर हमने प्रभु को पाना है तो तीन चीजें बड़ी जर्बदस्त उसमें मददगार चीजें हैं, क्योंकि प्रभु को पाने का यह वक्त है ना। सब महापुरूष यही कहते हैं कि मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है। और इसमें सबसे बड़ा काम यही करना है कि हमने उस प्रभु कन्त को पाना है। अब उस कन्त को पाने के लिये क्या करना चाहिये ? पानी की जरूरत है भाई। वह पानी किस चीज़ का हो ? प्रेम का हो —

दुनियाँ के ज़र्रा ज़र्रा में उलफ़त की लाग है।
पत्थर के भी जिगर में मोहब्बत की आग है॥

मोहब्बत एक कुदरती खासा है। हर एक इन्सान के अन्तर है। परमात्मा प्रेम है। आत्मा उसकी अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है। तो क्योंकि यह प्रेम, बहुत फैलाव में जाने के सबब से इसके टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं, इसलिये हम निर्बल और कमजोर रहे हैं। अब प्रेम का पानी जब तक नहीं मिलेगा, काम नहीं बनेगा। प्रेम का ख़ासा (गुण) है लगकर रहना कहीं न कहीं। अब जिस्म के साथ लग रहा है। बाल बच्चों के साथ, रूपये पैसों जायदादों के साथ, इसमें यह फैलाव में जा रहा है। यह चीजें फ़ना (नाश) हो जाने वाली हैं। आखर बदल जायेगी। हमारा ख्याल हटेगा, या यह चीजें हटेंगी। हम दुखी होंगे। तो वह कहते हैं ऐसे से प्रेम लगाओ जो कभी फ़ना न हो। कुरान शरीफ़ में आता है। ''अल इन्सान'' कि इन्सान का सबसे बड़ा ''लाबुदी लिल महबूब।'' कि महबूब होने के लिये, लाबुदी है, जरूरी है। ऐसा महबूब हो जो तुम्हें कभी छोड़कर न जाये। दुनियाँ के सारे सामान ही छोड़ जाते हैं।

नानक कचड़ियां संग छोड़ ढूंढ सज्जन सन्त पकियां।
एह जिवन्दे बिछड़े ओह मोयां न जाही संग छोड़॥

तो प्रेम करना कुदरती खासा है। मगर ऐसे से प्रेम और प्यार करो, जो फ़ना से रहित है। और वह कौन है सिवाय परमात्मा के या परमात्मा जिनमें प्रगट है। तो पहली चीज़ जो प्रभु के पाने के लिये है, वह प्रेम है। इसका पानी होना चाहिये। जैसे दरख्त बग़ैर पानी के कोई फल नहीं ला सकता, प्रफुल्लित नहीं हो सकता है, जिस हृदय में प्रेम नहीं —

सो तन जान मसान।

तो प्रेम के बनाने के लिये जरूरत है ऐसे पुरूष की। कहां से यह प्रेम बना है ? प्रेम एक बड़ी भारी बरकत है। यहां तक बयान किया है।

अज मुहब्बत मुर्दा जिन्दा मी शबद।

मोहब्बत से मुर्दे जिन्दा हो जाते हैं। समझे !

अज मोहबत शाह बन्दा में शबद॥

मोहब्बत से बादशाह गुलाम बन जाता है। अयाज़ का पता है आपको, कि अयाज

नौकर था महमूद का, बादशाह का। तो इतना उसका प्यार था, प्यार से गुलाम हो गया कि, ''गुलामें गुलाम शुद।'' तो प्यार सबसे बड़ी चीज है।

अज़ मोहब्बत ख़ार गरदन चूं गुलाब।

कान्टे गुलाब बन जाते हैं। कहीं कशमकशे हों, प्यार से बोलो, वह सब कसूर निकल जाते हैं। धोई जाती हैं। और मोहब्बत से ही —

अज़ मोहबत सिरका गरदन चूं शराब॥

सिरके को भी मोहब्बत करो, वह शराब बन जाती है। क्राइस्ट पर एक दफा इम्तिहान होने लगा तो यह दिया गया कि यसू मसीह ने पानी में देखा, वह शराब बन गई। पूछा गया, What is it ? यह जीवन बयान करो। बड़े लम्बे लम्बे लोगों ने मजमून इस पर लिखे। तो एक था Poet (कवि) वह बैठा रहा, चुपचाप बैठा रहा, बैठा रहा। वक्त गुजर गया। चार मिनट रह गये, कलम उठाई, पर्चा दे दिया। जब पर्चे का नतीजा निकला, He was First. सबसे ऊपर। क्या लिखा उसने आपको पता है ? Water saw her Lord and blushed, कि पानी जो है, अपने मालिक को देखकर शर्मा गया। तो बात असल में यह है। प्रेम की बात है। प्रेम से ही सब मुश्किलें आसान होती हैं । अगर यह प्रेम नहीं तो काम किसी का न बना है, न बन सकता है। इसलिये कबीर साहब ने कहा है।

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय॥

आलम फाजल बने, ग्रन्थाकार बने, बड़े-बड़े Propagandist बने, बड़ी डो डो बनी, सब कुछ हुआ, मगर प्यार नहीं है, ईर्षा और द्वेश है। अरे भई जिसका प्रभु से प्रेम है, प्रभु घट घट में है, सबसे प्रेम होगा कि नहीं ? जरूरी पहली निशानी। उसमें ईर्षा द्वेश कहां ? प्रेम में नम्रता होती है। प्रेम में बरदाश्त होती है। Love knows no burden. Love knows no laws. प्रेम बड़ी भारी बरकत है। तो इसके मुतल्लिक महापुरूषों ने, जहां भी आये, सबने यही कहा। He that loves not knows not God, for God is Love. जो प्रेम नहीं करता है, जानता नहीं, वह प्रभु को नहीं पा सकता। क्योंकि परमात्मा प्रेम है। प्रेम को पाना है तो प्रेम के जरिये पाओगे ना। और कौन सा जरिया हो सकता है ? तो इसलिये सब महापुरूषों ने इस बात पर जोर दिया

कि पहिली जरूरत जो प्रभु के पाने में है, मददगार हैं, वह केवल प्रेम ही है। दसवें गुरू साहब से पूछा गया कि महाराज दुनियाँ में बड़े महात्मा हैं, बड़े साधू हैं, बड़े सन्त हैं, अरे भई प्रभु को हम कैसे पायें ? तो उन्होंने कहा, भई जिसके अन्तर यहां प्रेम पैदा हो गया वही कामयाब है, ख्वाहे किसी समाज में है। तो उन्होंने फरमाया —

कहा भयो दोऊ लोचन मूंद के बैठ रहयो बक ध्यान लगाये।

क्या ? आंखें बन्द करके बगुले की तरह बैठ गये।

नहात फिरयो गयो सात समन्दरन लोक गयो परलोक गवायो॥

कभी इधर कभी उधर, दक्षिण और उत्तर, उत्तर से दक्षिण, सब समुन्दरों में अश्नान भी कर लिया —

बास कियो बिखियन स्यों बैठ के

दिन रात विषय विकारों में बैठे हुए हैं,

ऐसे ही ऐसो बेहस बसाओ।

ज़बानी जमा - खर्च, ऐसा करो, ऐसा करो, आप उसी हालत में रह रहे हैं। कहते हैं —

साच कहूं सुन लेहो सबै जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो।

कि ऐ भाईयों सबको मैं सच सच की बात सुनाता हूं, किसी समाज, किसी भेख, किसी में भी हो, प्रभु के लिये प्यार पैदा करो। अब प्यार का सवाल आता है कि कहां है प्यार ? प्यार क्या दुकानों में बिकता है ? खेतियों में उगता है ? कैसे मिलता है ? तो इस प्यार को पाने के लिये इलाज करना है। प्यार तभी मिलेगा, कहां से मिलेगा ? ग्रन्थों पोथियों में उसका ज़िकर है। इसके दो ही जरिये हैं, प्रेम के। पहला, जिसका प्यार होता है, कुदरती बात है, उसकी याद होती है। याद से क, ख, शुरू होती है। समझे ! जिसको स्मृति कहो, याद कहो, जप कहो, उठते, बैठते, सोते, जागते जिसकी याद रहे, आखर उसकी थोड़ी लगन बन जाती है। माता है, बच्चे की हर वक्त याद है। जब पेट में होता है तो भी उसी को याद है। मुंह से नहीं कहती। जब बाहर आता है तो हर वक्त, कही भी बैठी हो, उसकी याद है। मुंह से नहीं कहती।

याद से एक तड़प बन जाती है, लगन बन जाती है। उसको चैन नहीं होता बगैर देखे के। तो एक तो यह है। भई पत्थर को रगड़ रगड़ कर आग पैदा करो। दूसरी कहीं आग जलती से जाकर आग ले आओ। प्रेम है परमात्मा। तो परमात्मा प्रेम को पाने के लिये, जिन्होंने प्रेम को पाया है, उनकी सोहबत संगत अखत्यार करो। काम बन जायेगा। तो जब तक यह न बने काम नहीं होगा। तो इसलिये प्रेम को पाने के लिये हमको करना क्या होगा ? जिनके अन्तर प्रेम है, उनकी सोहबत। पहली बात। तो सब महापुरूषों ने इसी बात पर जोर दिया है कि जो इन्सान यह कहते हैं कि हम प्रभु से प्रेम करते हैं, अरे भई प्रभु से प्रेम करते हैं और लोगों से ईर्षा और द्वेष है, अरे भई वहां प्रेम कहां है ? गुरूबाणी में गुरू अर्जुन साहब फरमाते हैं कि जिन सखियों ने प्रभु को पाया है उनकी निशानी क्या है ? कौन सी निशानी बयान करते हैं ? कि उनकी आंखें उसके प्रेम में मस्त हैं। ज़बान से कुछ कहते हैं, आंख से आंसु डुबडुबा रहे हैं उसकी याद में। यह निशानी है। बस। अब प्रेम दिल में हो नहीं तो आंखों में कैसे आये ? आप बताओ। दिल उभरे तो आये ना ! तो पहली चीज़ प्रभु को पाने के लिये जैसे पानी हर एक बीमारी के दूर करने के लिये बड़ी मददगार चीज़ है, दरख्तों को सरसब्ज (हरा भरा) करने के लिये, या और जरूरी चीजें हैं, ऐसे ही प्रेम के बगैर काम नहीं बनता। प्रेम हो, बाकी रहा धूप और हवा, वह परमात्मा सूरज के समान बयान किया गया है। ''भृगो'' गायत्री मंत्र में आता है ना। ''तत्सवितुर वरेणयम''। आगे ''भृगो'' का जिकर है। भृगो सूरज को कहते हैं। ''उगवा सूर'' करके बयान किया है कबीर साहब ने। तो सारे महापुरूष इस बात का जिकर करते हैं कि वह परमात्मा सूरज की तरह रोशन है। जिनके अन्तर वह रोशन सूरज चढ़ जाये उसकी गर्मी पहुंचे, तब प्रफुल्लित होगा। पौधे हो अगर धूप न लगे तो वह प्रफुल्लित नहीं होता। जहां पानी की जरूरत है वहां धूप की भी जरूरत है। बीमारियों में भी जहां पानी की जरूरत है अगर खुली धूप में बिठा दो तो विटामिन बी अपने आप आने लगती है। यह जिसम में बड़ी भारी ताकत की चीज़ है। अब यह धूप कहां से आये ? वह सूरज जिन हृदयों में चढ़ा है उनके दर्शन करो। समझे ! यह निशानी है पहली। किस चीज़ की ? प्रेम की ! प्रेम के बगैर कोई काम नहीं बनता। प्रेम हो तो इन्सान कुर्बानी कर जाता है। प्रेम के बिना, Love knows sacrifice. किसी किसम की भी कुर्बानी करनी हो वह कोई बड़ी बात नहीं समझता। तो पहले ऐसे महापुरूषों के दर्शन। प्रेम हो तो दर्शन करोगे, प्रेम दुनियाँ में

लगा है, तो वह सिनेमा में जायेगा, और और जगह में जायेगा। जिसको प्रभु का प्रेम है, पाने का, उसकी याद लगातार, उठते बैठते, चलते फिरते होगी। यह निशानियां हैं। जिसका प्यार हो वह हर वक्त याद रहता है कि नहीं ? लाज़म मलजूम चीज़ है। तो उसकी याद करो। याद को बढ़ाने के लिये या इस Infection (छूत) को पाने के लिये, जिनके अन्तर यह प्रभु प्रेम है, उनकी सोहबत करो।

सुभर भरे प्रेम रस रंग, उपजे चाव साध के संग ॥

प्रेम और रस के वह Overflowing (लबालब भरे) प्याले होते हैं, जिनको देखने से हमें चाव बनता है।

महा पवित्र साध का संग। जिस भेटत लागे हरि रंग ॥

तो महापुरूषों की संगत सोहबत सूरज की तरह गर्मी पहुंचाने वाली है।

आपको पता हो जब मौलाना रूम साहब के पास शम्स तबरेज आये हैं, तो वह कहते हैं कि मुझे मुरशिद (गुरू) ने कहा है कि जाओ उसको जरा गर्मी दे आओ, गर्म कर आओ। तो गर्म करने के लिये उभार चाहिये भई। तो सोहबत संगत में दर्शन का होना।

जिस डिठियां मन रहसिये, क्यों पाईये तिन संग जियो।
सन्त सजन मन मित्र से लायन हर से रंग जियो ॥

उनके अन्तर रंग और नशा है, उनकी सोहबत अखत्यार करो। कहते हैं, ऐसी सोहबत कैसे मिले ? उससे दो चीजें मिलती हैं। लोग पूछते हैं हम क्यों इन महापुरूषों के दर्शनों को जाते हैं। वहां वह जलवा है, आंखों में, बाहर इजहार कर रहा है। जैसे जैसे उससे ताल्लुक बनता है, वैसे वैसे उसकी गर्मी पहुंचती है। इसलिये मौलाना रूप साहब, ने कहा।

गर कुशायद ओ सरे अम्बाने राज। जां बसूये अज़ सद खाकत तरको ताज ॥

उनको देखने से रूह उनकी उभार करती है, रूह को उभार मिलता है, इसलिये उनके दर्शन के फल है। मगर कैसे दर्शन ? भाव के साथ प्रेम के साथ, नहीं तो महापुरूषों को सारा जहान ही देखता है।

गुरू डिठियां मुक्ति न होवई, जिचर सत्गुरू सबद न धरे प्यार।

देखने से मुक्ति नहीं, गुरू नानक साहब को अनेकों जीवों ने देखा है, कुराहिया उनको लोगों ने कहा। कसूर के शहर में उनको दाखल होने नहीं दिया। देख लो। हमारे हजूर थे। फरमाया करते थे लोग कि भई इनके पास मत जाओ और इनकी आंखों में मत देखो, यह जादू कर देते हैं। आंखों से वह इज़हार हो रहा है ना सूरज का, उनका अन्तर —

दर बशर रूपोश कर्दन आफ़ताब।

सूरज छुपा पड़ा है, झलक देता है उन आंखों से बाहर —

यह आंखें हैं धुर घर की।

स्वामीजी महाराज फरमाते हैं। तो बार-बार दर्श करने से —

जिस मिलियां मन होय अनन्दा सो सत्गुरू कहिये।

यह निशानी दी है अनुभवी पुरूषों की। तो उनकी सोहबत में बैठने से, वह एक ऐसे दरख्त हैं जो सायादार हैं, जिस पर फूल महक रहे हैं। मोलाना रूम साहब ने इसलिये कहा कि भई क्या करो ? फरमाते हैं —

बज़ेरे आं दरख़्ते रौ बरौ गुलहाये तर दारद।

ऐसे दरख्त के नीचे बैठो जिसमें तरो ताज़ा फूल महक रहे हों। धूप से झुलसा हुआ इन्सान आये, उसकी संगत में बैठ जाये, साये के नीचे, तो होश आ जाती है। अरे भई दुनियाँ में झुलसा और तृष्णा की आग में जला हुआ इन्सान जब अनुभवी पुरूषों के चरणों में आता है तो होश आ जाती है। तो होश दिलाने के लिये ठंडक से बच कर गर्म होने के लिये, बार-बार दर्शन करो। लोग पूछते हैं तुम क्यों जाते हो भई बार बार ? अरे भई दर्शन को जाते हैं। क्या मिलता है भई ? वहां पर गर्मी मिलती है। वहां पर उभार मिलता है रूह को। आलिमों की सोहबत से, यह याद रखो बुद्धि को तो उभार मिलेगा, रूह को उभार नहीं मिलता। अनुभवी पुरूष की सोहबत की निशानी यही है कि जहां तुम्हारी रूह पिण्ड को छोड़ने लग जाये, यकसू होकर बैठो जिसम भूल जायेगा। तो यह है दूसरी चीज़। तो उस का कारण क्या है ? कहते हैं —

सूरतश दर ख़ाको आब व जां दर लामकां।

शकल मिट्टी और पानी, उनकी रूह तो लामकां में सोती है। बाहर जिसम में बन्द

मालूम होती है।

लामकाने फौके वहमे ख़लके दो जहां।

जो हर एक का मालिक है और जिसको पा रहे हो, वह उसमें झलकें दे रही है। एक चीज़ कहीं पर हो, हमारा दोस्त हो, अगर बहरूपिया बनकर आ जाये, जो पहचान ले ना। आपको पता है हीर रांझे के किस्से में जिकर आता है कि हीर ने पहचाना जोगी को। मैं कहता हूं मैंने जोगी को पहचान लिया है। अरे भई जिसके अन्तर उस प्रभु की लगन होती है उसके अन्तर वह जो जलवा देने वाला है वही तो है। आखर इन्सान का उस्ताद इन्सान। हम जिन्सियत कुदरती खासा है। जिसके अन्तर वह जलवा दे रहा है उसकी सोहबत में तुम्हें उसमें टिकाव मिलेगा, शान्ति मिलेगी। उसमें आपको उभार मिलेगा। जो तुम उसकी जबान को न भी समझो तो भी तुम उसके मतलब को समझ रहे हो।

मैं जर्मनी में गया, बरलिन में, मैं जर्मन जबान नहीं जानता था। वहां मैंने एक Interpreter (दुभाषिया) रखा। मैं अंग्रेजी में बोलता था, वह तरजुमा करके सुनाता था। पांच दस मिनट के बाद वह (जर्मन) कहने लगे, अरे भई तुम तरजुमा न करो, We understand more from his eyes. हम इनकी आंख से बहुत कुछ समझ रहे हैं। तो किसी ऐसे के पास बैठने से भई अपने आप Understanding काम करती है। यह निशानी दी है, इस बात की, गर्मी है। समझे ! जब तक यह काम नहीं बने काम नहीं बनता। अब वह होता कौन है ? अब सवाल यह है। मिलना तो परमात्मा को है ना ! परमात्मा अति सूक्ष्म और अगम है। जब वहां पहुंचेंगे तो देखेंगे ना। जिस हृदय में, है वह सब में, कोई घट उससे खाली नहीं है, पर जिस घट में वह प्रगट हो गया है, वह बलिहार जाने के काबिल है। जिस घट में प्रगट हो गया उसको Commission मिलती है, जाओ भई इन बिचारों को निकाल कर लाओ। उसको वह Commission मिली है। ऐसे की सोहबत में यह चीज़ें मिलती हैं। वहां जाओ, मन खड़ा होगा।

जिस डिठियां मन रहसिये सत्गुरू तांका नाओं।

थोड़ी देर के लिये टिकाव, जिसको यकसूई से देखने से तुम्हारी रूह सफ़र करने लग जाये बेअखत्यार, यह निशानी दी है। तुम जबानदानी न भी समझते हो तो भी मतलब समझ रहे हो, यह निशानी है। तो ऐसे पुरूषों की सोहबत संगत ही प्रभु को

पाने के लिये है। जिनकी आंख खुल जाती है वह कहते हैं, अरे भई यह तो इन्सान न था, कुछ और ही था। और सच्ची बात भी यह है कि परमात्मा का जब कोई शरीक, कोई सानी नहीं है, तो उसकी कौन खबर दे सकता है ? ठंडे दिल से विचारो। यही कहना पड़ेगा कि जिस हृदय में वह खुद प्रगट है, या Linked (जुड़ा) है कहो, या जिस पोल पर वह Connected है कहो, कौन है ? वह खुद ! तो ऐसे की ही सोहबत हमें उस प्रभु के देश में ले जा सकती है। तो सारे महापुरूषों ने इस बात पर जोर दिया है कि दर्शन करो बार बार। कबीर साहब ने यहां तक कहा कि दिन में कई बार, अनेक बार, फिर कई बार नहीं तो दो बार सही, कहते हैं अच्छा दो बार नहीं तो एक बार सही, फिर कहा, अच्छा एक दिन छोड़कर सही, फिर पक्ष पर, फिर हफ्ते में दो बार, फिर हफ्ते में, फिर पन्द्रह दिन में, फिर महीने में, तीन महीने में, छह महीने में, फिर साल का जिकर किया कि जो साल भर भी दर्शन नहीं करता है वह Connection ढीला पड़ जाता है।

एक भाई आये अफरीका से हमारे हजूर के पास। कहने लगे महाराज मुझे अफरीका गये हुये पांच साल हो गये। कबीर साहब ने कहा जिसको एक साल हो जाये, उसका Connection कट जाता है। अब हम क्या करें ? कहने लगे, भई यह कबीर साहब ने कहा था, मैंने नहीं कहा था। मेरा रिश्ता तो कभी टूटता नहीं। समझे ! एक बार वह तुमको पकड़ ले तुमको नहीं छोड़ेगा। तुम छोड़ जाओ तो छोड़ जाओ। यह फजीलत है। मैं गया West (पश्चिम) में। वहां पर लोगों ने कहा, When is Christ returning ? कि यसू मसीह साहब कब वापस आयेंगे ? मैंने कहा भई हैरानी वाली बात है, क्या तुमको कभी वह छोड़कर भी गया है ? तो उन्होंने यह कहा है कि I Shall never leave thee nor forsake thee till the end of the world. मैं तुमको कभी नहीं छोडूंगा दुनियाँ की आखिर तक भी। हां यसू मसीह, Jesus जिस इन्सानी पोल (मनुष्य देह) पर वह इजहार करती थी क्राईस्ट पावर, गुरू पावर, वह जिसम तो छोड़ गया, वह (गुरू पावर) नहीं छोड़ती। अरे भई गुरू पावर इन्सान नहीं होती। गुरू जो है वह इन्सान नहीं। इन्सानी जामा रखता है। वह क्या होता है ? अभी आपको Detail (सुविस्तार) से जिकर करूंगा। तो गुरू पावर जिस पोल पर है एक बार जिसको अपने में ले, उसको छोड़ती नहीं। मुझे याद है, अमेरिका से एक विन्डलाग आदमी था, मेरे से उसने उपदेश लिया। वह सखत बीमार रहा। उसने मुझे चिठी लिखी कि मेरे

डाक्टर कहते हैं कि तुम मांस का सेवन करो। मैंने उसको लिखा, भई तू ऐसा न कर। तेरी जिन्दगी के दिन थोड़े हैं, इसलिये तू परहेज रख। खैर उसने लम्बा चौड़ा फिर लिखा, मैं लाचार हूं, बहुत बीमार हूं। मैंने कहा, All right, do it जाओ करो। अगर तुम छोड़ना चाहते हो तो छोड़ जाओ। वह पावर तुमको नहीं छोड़ेगी। यह चिट्ठी मैंने उसको लिखी। मैं जब अमेरिका में गया, सैन्टा बारबारा का वाकिया है, मैं वहां पहुंचा। वह सखत बीमार था। जिस अस्पताल में था, उसको अलहेदा रखा था। एक नर्स आई कि वह सखत बीमार है, वह कहता है कि मैंने मास्टर को छोड़ा है, वह आया है यहां, क्या वह मुझे देखेगा ? मैं किस मुंह से मास्टर को कह सकता हूं कि वह मुझे देखे। यह लोग Sincere बड़े होते हैं। मुझे पूछा उस नर्स ने कि क्या तुम जाओगे उसको देखने ? मैंने कहा हाँ, मैं जरूर जाऊंगा। मैंने कहा चलो। अस्पताल गया। गये तो वह अपनी हालत में था। मैंने उसके सिर पर हाथ रखा। उसने आंख खोली। मैंने कहा, It is I, I am come now मैं आ गया हूं। रो पड़ा। कहने लगा मैंने हुक्म अदूली की है। मैंने कहा कोई फिकर नहीं, You are Repenting कोई फिकर की बात नहीं। आंखें बन्द करो। भई आंख बन्द की, देखा क्या है, नूर है, स्वरूप आ गया नूर में। छोड़ दो बाहर का ख्याल, चले जाओ अपने आनंद में। उसकी घरवाली थी। उसने उपदेश नहीं लिया था। वह कहने लगी क्या यह जा रहा है ? मैंने कहा Madam ! He will now be going यह जा रहा है। तुम अब इसका ख्याल छोड़ दो। कहने लगी बहुत अच्छा। वह लोग बड़े आज्ञाकार होते हैं। कहने लगी बहुत अच्छा, मगर मेरी यह ख्वाहिश है कि जाते हुये मुझे जरा Good bye कर जाये। उसका ख्याल अन्दर लगा है। फिर मैंने उसके सिर पर हाथ रखा। उसने आंख खोली कहने लगी, I want to see you off. कहने लगा All right, Good bye. तो यह होता है। भई गुरू, वह पावर जो उसमें काम कर रही है वह जिसम नहीं होती याद रखो। जो समझते हैं, कई पोलों पर वह इज़हार करके, वह पावर मरती नहीं, पोल बदल जाते हैं। तो इसलिये पहली चीज मैंने अर्ज की, प्रेम। प्रेम और भाव, इसके बगैर कोई काम नहीं बनेगा। मोटर हो, मुआफ करना, उसमें Electric Connection ही न हो। अगर पेट्रोल से भरी हो, तो भी नहीं चलती, मोटर। दीक्षित होने के बगैर, बैत होना कहो, दीक्षित होना कहो, Initiate होना कहो, जब तक Charging नहीं तुम्हारे अन्तर आत्मा को दबी हुई को उभार नहीं Injection नहीं होगा, तब तक तुम ऊपर नहीं आ सकते हो। Injection हो

जाने पर, अगर प्रेम नहीं होगा तो भी तरक्की नहीं होगी। खाली प्रेम भी तुमको वहां नहीं ले जा सकता है। खाली Injection के साथ उभार जल्दी बगैर प्रेम के नहीं हो सकता। तो इसलिये हमें चाहिये क्या ? आप चाहते हैं ना प्रभु को ? क्या होता है क्या नहीं, सिलसिला आगे चलेगा। फ़िलहाल उसको पाने के लिये पहले प्रेम की जरूरत है, फिर उसका वह जो जलवा उसकी आंखों से सरशार होता है ना, बाहर इज़हार करता है, उसी में बार बार बैठने की जरूरत है। कई बार हजूर को मत्था हम नीचे टेका करते थे। कहते थे नीचे क्या लेते हो, मैं तो ऊपर हूं ? तो मिट्टी है, मिट्टी में नीचे क्या तुम लेते हो ? मैं तो ऊपर हूं। मेरी तरफ देखो। और पुराने महात्माओं में यह एक रस्म है, तुलसी साहब वगैरहा के जमाने में, वह आरती किया करते थे। स्वामी जी या और और। आरती यह होती है, कि आंखों को आंखों में मिलाकर बैठ गये, रूह की जबान से। आंखें एक मम्बा (स्त्रोत) है जिससे इज़हार करती है रूह।

एक बार हजूर बैठे थे। यही हजूर का यह खासा था, जब कभी वहां जाने का इत्तेफ़ाक होता था तो कहते, आओ भई कृपालसिंह, बैठ जाओ। बैठ जाना। बातें करनी उनसे। लोग अपना लुत्फ़ ले जाते थे। एक दफ़ा मैंने जिकर किया, जमाने बदलते रहते हैं, कभी वह जमाना था कि अंगूठे धुलाकर पिलाया करते थे गुरू साहबों के वक्त ! कभी वह वक्त आया कि जब, दस बीस इन्सान, एक तवज्जो को Charge करके देना शुरू किया। महात्माओं की नजरों में बड़ी भारी तासीर होती है। कीमिया होता है Charge कर देती है। कभी वह वक्त फिर आया, आरती शुरू हुई, Charging हो जाती है बेअख़्त्यार। सब दुनियाँ भूल जाती हैं, रूह से रूह का मिलाप होता है। कभी वह वक्त आया जब मत्थे टेकने का सवाल हुआ। अब मत्थे टेकने भी नहीं रहे, इसमें क्या रखा है। तो असल असूल तो कहीं जा नहीं सकता है भई। भक्ति हो, प्रेम हो। दूसरा बार बार संगत, दर्शन। महापुरूषों की संगत हो। अब सवाल यह आता है कि सत्संग का फ़ायदा क्या है ? सत्संग किसको कहते हैं ? यह भजन की बाड़ है हजूर फरमाया करते थे, सत्संग।

जैं सत्गुरू तैं सत्संगत बणांई।

जहां पर सतस्वरूप हस्तीं बैठी है, उसके गिर्दा गिर्द हजारों बैठे हों, उसका नाम सत्संग है। एक जागता पुरूष हो, हजारों गिर्दा गिर्द सो रहे हों, हम कहेंगे यह जागते पुरूष की संगत है। वह सबको जगा सकता है। तो सब मन इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं।

कोई इन्द्रियों के घाट से ऊपर गया नहीं, न आप जागा है, दूसरों को कैसे जगायेगा ? बड़ी साफ़गोई है। तो जागते पुरूष की संगत का नाम ही सत्संग है। सत्संग में क्या होता है ? सत्संग करो बनाकर। स्वामी जी महाराज ने फरमाया —

सत्संग करो बनाय।

बनाकर करना किसको कहते हैं ? जब सत्संग करो तो या तुम रहो और वह रहे, और कोई भी न रहे, बल्कि अपने जिसम का भी ख्याल न रहे, महवियत (मग्नता) में तुम आ जाओ। Receptive होने से, तुम जबान भी न समझो, मायने समझोगे। रूह से रूह बात करेगी। तो यह संगत का फल है। सत्संग जितना ज्यादा मिले, खुशी की बात है। अब सवाल यह आता है कि जो यहां नहीं हैं, दूर हैं, वह क्या करें ? अरे भई अमेरिका में जो लोग बैठे हैं, वह कहां जायें ? यहां तो आप भाईयों को रोज न सही, हफ्ते बाद सही, महीने, तीन महीने, छह महीने बाद सही, हिन्दुस्तान में रहने वालों को। जो पाताल लोक में बैठे हैं वह क्या करें ? तो सब महापुरूषों ने कहा है, गुरू गोबिन्द सिंह साहब फरमाते हैं, जहां पांच प्यारे हों, वहां परमात्मा होता है। क्राईस्ट ने कहा एक से ज्यादा लोग मेरी याद में बैठें। am there. तो गुरू पावर जिसम नहीं, इसलिये कबीर साहब ने कहा कि गुरू सात समुन्दरों के पार रहता हो, शिष्य इस तरफ रहता हो, ''दीनी सुरत पठाय''। अगर रेडियो हजारों मीलों से आवाज को पकड़ सकता है, अरे भई Receptive होने से रूह को क्यों नहीं पकड़ती ? तो इसका नाम है सत्संग। प्रेम के साथ सत्संग हो, तब काम बनेगा।

अब सत्संग में क्या कुछ मिलता है ? महाभारत में जिकर आता है, जिस तरह फूलों की खुशबू सब साथ चीजों को मिट्टी और पानी को या कपड़े को ख़ुशबूदार कर देती है, इसी तरह नेक की सोहबत, उनकी सोहबत करने वालों को अपना असर देती है। यह महाभारत में जिकर आ रहा है। मूढ़ों की सोहबत अविद्या का रंग देती है, और संतों और महापुरूषों की सोहबत सत् और धर्म का असर देती है। इसलिये चाहिये कि संत महात्मा की सोहबत करो ताकि उनके शान्तिदायक असर को तुम ग्रहण करो। यह है। यही और महात्माओं ने, मौलाना रूम साहब ने और वाज़ेह (स्पष्ट) तौर से बयान किया। फर्माते हैं, एक बार मैं हमाम के अन्दर गया —

खुशबूये दर हमाम रोज़े।

एक हमाम में गया, वहां मुझे बड़ी भारी खूशबू आई।

रसीदये अज़ दस्ते महबूबे बदस्तम।

वहां पर मिट्टी मैंने देखी बड़ी खुशबूदार थी। मैं बड़ा हैरान हुआ, भई ऐ मिट्टी ! कैसे तुम खुशबूदार हो गये ? कहते हैं —

बदो गुफ़तम कि मुश्की या अंबीरी।

तू बता मुशक है या अम्बर है ? क्या है ? बड़ी खुश्बू तुझसे आ रही है।

तू अज बूये दिलावेजम मस्तीये जम।

तेरी खुशबू को लेकर मुझे मस्ती आ रही है। बता तू है क्या ? जवाब देती है मिट्टी —

गुफता आं मन गिले नाचीज़ बदम।

कि मैं मामूली मिट्टी थी मगर हुआ क्या —

वलेकन मुद्दते बा गुल बसर करद।

थोड़ी मुद्दत फूलों के दर्मियान मेरा बासा आ गया था। तो नतीजा क्या हुआ ?

जमाले हमनशीं दर जां असर करद।

वह सामने चीज़ ने मेरी जान में रूह में असर कर दिया।

तो सोहबत संगत से, अगर खुशबूदार चीज़ कपड़े में रखकर कपड़े को महका देती है, अगर आप भई एक अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठकर यकसूई दिल से बैठो, Receptive होकर, उसका रंग तुमको क्यों नहीं हो सकता ?

महापवित्र साध का संग। जिस भेटत लागे हरि रंग॥

यह ऐसे समझो, आग जली हुई तुम ले लेते हो। यह चीजें हैं जो मददगार हैं। यह बुद्धि विचार में आने वाला मजमून नहीं है। समझे !

सोचे सोच न होवई जे सोची लख वार।

वह Subject of thought नहीं है। न यह बुद्धि का मजमून है। जब तक यह बुद्धि

स्थिर न हो तब आत्मा का साक्षातकार नहीं होता। बड़ी साफ बात है। ''इन्द्रियों दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षातकार होता है।'' तो आप समझ रहे हैं, कि मतलब क्या है, कि सोहबत और संगत एक रंग के देने वाली है। अगर नदी और नाले, मुआफ़ करना नदी और नाले गंगा में मिलकर गंगा ही हो जाते हैं, कैसे भी नाले हों। अरे भाई अगर शराब की बोतल मुआफ करना, अगर गंगा में बहा दो तो गंगाजल बन जाता है। अरे भई अगर गई गुजरी रूहें जो दुनियाँ के रंग में रंगी हैं, अगर उस महान सागर में अश्नान करेंगी तो उसका रूप बनेंगी। कायदे की बात है। आपको पता हो भगवान कृष्ण जी ने क्या फरमाया कि अगर दुराचारी से दुराचारी इन्सान भी हो, जब वह हारकर मेरे चरणों में आ जाता है, तो उसको अब दुराचारी न कहो। कहीं तो खड़े हो जाओ भई। मानते हैं हम डाकू हैं, हम चोर हैं, हम यह हैं, वह हैं, मगर वह (प्रभु) और उसका नाम तो पतितपावन है कि नहीं ?

भरिये मत पापां के संग। ओह धोपे नांवे के रंग॥

और पापों से मति भर जाये तो वह उसके, नाम के साथ लगने से दूर हो जाती है। हमारे हजूर फरमाया करते थे कि अगर जुलाब की गोली कोई भूल से भी खाले तो भी दस्त लग जाते हैं। भाव से खाओ या अभाव से खाओ, तो भी दस्त लग जायेंगे। खाओ सही। अरे भई जो वह दवाई देते हैं, क्या ? नाम का Contact यह अलेहदा बात रही। फिलहाल हम यह देख रहे हैं कि कैसे हवा, धूप और पानी की तरह हमें इस तरफ चीजें यह मददगार हो सकती है। पहली चीज़ भाव, प्रेम सबसे पहला। यह सब महापुरूषों ने कहा है। शम्स तबरेज साहब ने कहा —

सद साल इबादत कुनद निमाजी नेस्त। कसे को इश्क नदारद खुदा राज़ी नेस्त॥

सौ साल इबादत करते रहो, अगर यह करते हुये तुम्हारे दिल में प्रभु का प्यार नहीं जागा तो तुम खुदा के राज़ को (प्रभु के भेद को) नहीं पा सकते हो। सौ सयाने एक ही मत। तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि प्रेम है सबमें पहली चीज, दूसरी है सोहबत और संगत। सोहबत संगत से उभार मिलता है। वह उभार आप नज़दीकी से भी ले सकते हो और दूरी से भी ले सकते हो अगर Receptive बन जाओ तो। तीसरी चीज हवा है। जिस मण्डल में ऐसी हस्ती बैठी है उसमें कई रंग आते हैं। समझे ! उस हवा में एक Charging होता है। उस Charging से लोग असर ले जाते हैं। पानी के बीच में बैठ

जाओ तो ठंडक मिलती है कि नहीं ? तो उस मंडल में बैठने से, उस मंडल में एक खास Charging की रोयें चलती हैं। जैसे देखिये पहलवान लोग होते हैं, West में यह कायदा है जहां बहुत कमजोर लोग होते हैं वहां वह पहलवानों को बिठा देते हैं। वह हंसते है। ताकि जो तन्दुरस्ती की रोवें हैं, वह उस मण्डल में Charge हों और कमजोर आदमी उसको Grasp कर ले। तो जिस मंडल में वह बैठा है उसके ख्यालों की रौवें उसके जिसम से निकलती हैं और उस मंडल को Charging करती हैं, यह हवायें चलती हैं। दूसरे, याद रखो, जो हवा आग के साथ लगकर आयेगी, वह गर्मी देगी। जो हवा बर्फ़ के साथ लगकर आयेगी वह ठंडक देगी। क्योंकि उनके हृदय में प्रभु का रस और रंग है, नशा है, सरूर है, शान्ति है, टिकाव है, सबके लिये प्रेम है, इसलिये जो आवाज वह कहते हैं, वह भी Charge होकर आती है, वह ठंडक दे जाती है। जिनके हृदय में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की तपश बस रही है, अरे भई कितनी मीठी बातें करे, तो भी असर तो गर्म होगा। तो यह तीन चीजें हैं, जो तुमको तैयार करती हैं उस हकीकत को पाने के लिये। समझे ! सोहबत संगत के बगैर न काम किसी का बना है न बन सकता है। और दूसरे क्या होता है ? होश आने लगती है। जब आप सायादार दरख्त के नीचे आ बैठो ना, तो होश आती है। अरे भई जब तुम किसी अनुभवी पुरूष की सोहबत में आकर बैठ गये Receptive होकर, दिल की भ्रान्ति हट जाती है। समझे ! उनका मन खड़ा है, तुम्हारा मन भी खड़ा होने लग जाता है थोड़ी देर के लिये। ''नफ्स हरगिज न कुशद जुज ज़िल्ले पीर।'' मन काबू नहीं आता जब तक इस पर किसी अनुभवी पुरूष का साया न पड़े। यही तुलसी साहब ने फरमाया है।

सुरत साध संग ठहराई। तौ मन थिरता कुछ पाई॥

साधु की संगत में मन खड़ा होता है, थोड़ी सी होश आती है, Awakening (जागृति) मिलती है। यह बाहरी असर हो रहा है दर्शन में। जब महवियत (तन्मयता) हो गई उसका नाम है गुरू भक्ति। गुरू भक्ति से अगला कदम चलता है। जब तक वह न बने, एकता नहीं होती। तो उसके लिये महापुरूष हमेशा यह बयान करते हैं, ऐसा करोगे —

दो ते एक रूप होय गयो।

दसवें गुरू साहब ने फरमाया है कि भई मेरी गति यह हो गई थी कि मैं दो से एक रूप बन गया था।

चित न भयो हमरो आवन को।

हमारा चित नहीं करता था दुनियाँ में आने को। मगर कहा —

ज्यों त्यों कह के मोहि पठायो।

जाओ बच्चा काम करना है। आ गये। ऐसे महापुरूष जब आते हैं, वह कहते हैं, अरे भई मैं आदमी हूं, मैं तुम्हारी ही तरह इन्सान हूं, मैं खुदा नहीं, खुदा और है जो मेरे अन्तर में है, और तुम्हारे अन्तर में भी है। मुझे उससे जुड़ना नसीब हुआ। तुम भी जुड़ जाओ। जो जुड़ा है वह जोड़ेगा ना। हम लोग उसको खुदा से भी ज्यादा दर्जा देते हैं क्योंकि दुनियां में कोई किसी का काम कर ले, हम कहते हैं यह खुदा से बड़ा है। अरे भाई जिस को प्रभु मिला दे कोई —

गुरू गोबिन्द दोउ खड़े किसके लागूं पाय ।
बलिहारी गुरू आपने जिन सत्गुरू दियो बताय ॥

जो हमको मिला दे, अरे भई उसका क्या एहसान है ! तो इसलिये महापुरूषों की सोहबत में जाकर अब जिसका वह रूप बने हैं, उसका अगर हम रूप बन जायें वह Godman है, God Plus Man अगर तुम Guruman बन जाओ, क्यों साहब ! खुदा आ गया कि नहीं तुम्हारे अन्तर ? इसका नाम है गुरू भक्ति ! और जब तक यह न बने, काम नहीं बनता। उसकी शकल, उनकी आंखों में वह नशा जो है ना, उससे हमको असर मिलता है। मौलाना रूम साहब ने फर्माया है इसीलिये —

आंचे बामा बादाकशां साग़रे शहाबी मी कदर।

क्या हुआ जो शराब का प्याला, जो एक शराबी को देखने से भी शराब छलकती देखे तो नशा आ जाता है, अरे भई पीने में क्या हाल होगा ? तो कहते हैं ऐसे ही —

दौरे चशमें तो बवद मखमूरे दिले मारा।

कि तेरी आंख में जो डौरे आते हैं ना, वह हमारे दिल को भी डौरे दे जाते हैं। तो सोहबत संगत का बड़ा भारी असर है भई। स्वामी जी फरमातै हैं।

यह आंखें हैं धुर घर की।

मैं नहीं, यह प्रभु ही इसमें देख रहा है। मगर जो इस रंग में रंगे हैं उनकी यह कहानी है। आलिमों फाजिलों की और कामी क्रोधियों की यह हालत नहीं बयान की। गुरूडम

ने आज दुनियाँ में बदनाम कर रखा है, बल्कि मैं यह कहूंगा कि बड़ी गहरी खन्दक में डाल रखा है। लोग सच्चे हैं। उसका कारण क्या है, कि जो मन इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, कितनी भी इल्मियत जाहिर करें, आख़र हैं तो इन्द्रियों के घाट पर ! वह गिरेंगे। जब गिरते हैं, दुनियां गिरते देखती है, लोग कहते हैं, It is all Gurudom. हमें साधु सन्त नहीं चाहिये महाराज, किताब अच्छी है, मेहरबानी आपकी। मगर जगह जगह साधु सन्त और गुरूओं की महिमा गाई है महापुरूषों ने। अरे भई वह कैसे गुरू ? जिनके अन्तर वह खुद प्रकाश करता है। जो खुद उस अंधेरे से निकल कर प्रकाश में आये हैं, और दूसरों को ला सकते हैं, उसका नाम गुरू है। उनसे यह कुछ फैज मिलते हैं। इसिलये क्या कहते हैं, क्या करो —

भाई रे दासन दासा हो।

जो उसके दास बने हैं उनके दास बन जाओ। वह Godman है, तुम Guruman बन जाओ। तो इसमें क्या होता है ? दो से एक रूप बन जाता है। उसमें और कौन रह जाता है ?

चूं के करदी जाते मुरशिद रा कबूल। हम खुदा दर जाते शामिल हम रसूल॥

जब उसकी जात को तुमने कबूल कर लिया, खुदा और रसूल दोनों उसमें आ गये। अरे भई खुदा ही उसमें बोल रहा हैं। जो रिसालत लेकर आते हैं महात्मा, वह भी उसी में है। समझे !

मैं आपको एक छोटा सा वाकिया सुनाऊं। मैं अमेरिका में गया, वहां Talks वगैरा होती थी। वहां Free Talks (मुफ़त) होती थीं ना। तो एक लेडी थी, वह कहने लगी मुझे क्राईस्ट मिलता है रोज, बातें करता है। मैंने कहा बहुत अच्छा। लोगों ने उसको कहा भई तुम नाम ले लो। खैर जिस दिन नाम देना था, उस दिन वह नहीं आई। आई पीछे। लोगों ने कहा भई तुम आये नहीं। कहने लगी, भई क्राईस्ट मुझे मिलता है, बातें करता है, मुझे और किसी की जरूरत नहीं। मैंने कहा बहुत अच्छा भई, तुमको क्राईस्ट मिलता है ना। कहने लगी हां। मैंने कहा अब जब मिले तो उससे पूछना कि मैं अब आगे क्या करूं ? आखर वह हफ्ता भर आती रही। क्यों भई मिला है क्राइस्ट ? कहने लगी अब तो आना ही बन्द हो गया। मैंने कहा नहीं, अब आयेगा। पूछना उसको। खैर, तो मैंने जाना था लूईविली वाशिंगटन से सुबह पांच बजे। शाम को सात बजे

टेलीफोन करती है मुझे Where is the Master ? I want Initiation. मैंने नाम लेना है, उपदेश लेना है। उसको खन्ना साहब ने कहा, भई इस वक्त नाम लेने का कौन सा वक्त है ? उस दिन तो तुम आये नहीं। वह तो जा रहे हैं। कहने लगी I don't want to have No from you. मैं तुमसे ना करना नहीं सुनती। मैं उनसे बात करना चाहती हूं। भागी हुई आ गई, कि मुझे नाम दो। मैंने कहा भई मैं अब जा रहा हूं लुईविली, तुम वहां आ जाओ, नाम लेना है तो। मैंने कहा तुम आये हो अब, पहले क्यों नहीं आये ? कहती है, मुझे क्राईस्ट मिला है। मैंने पूछा है कि मैं आगे क्या करूं ? उसने कहा है कि आगे जाने के लिये अब उसके पास जाओ, इसलिये मैं आपके पास आ गई। तो भई ज़मीन पर जो यह काम कर रहा है, उसके यह सब मोहताज हैं मुआफ़ करना। हमजिनसियत खासा है। यह पावर, जिसमानी इन्सान नहीं है याद रखो। जिसम के पोल पर इज़हार करती है। जिसम भी काबिले इज्जत है, इसमें शक नहीं, मगर एक बाकायदा निज़ाम है, उसके मुताबिक काम चलता है। तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि ऐसे पुरूषों के साथ अगर तुम उसका रूप बन जाओ, फिर वह तुममें बोलने लग जाये और तुम यह देखो कि —

मन तो शुदम तो मन शुदी। मन तन शुदम तो ज़ां शुदी॥
ता न गोयद बादअज़ी। मन दीगरम तो दीगरी॥

एक बार हजूर थे। गुजरांवाले का वाकिया है। बाहर निकले। तुम देखते हो मैं कौन हूं ? बाज वक्त जलवे में आते हैं तो कह देते हैं, देखो मैं कौन हूं ? देखो तो सही मैं कौन हूं ? गुरू यह देखता है, महसूस होता है कि वही (प्रभु) बोल रहा है। तो अब भी होता है। गुरू में लय होने, फिनाफ़िलशेख होने की यह बरकत है। तो सब महापुरूषों ने इसीलिये इस बात पर जोर दिया है कि क्या करो ? गुरू भक्ति धारण करो। हाफिज़ साहब से पूछा गया कि तुम बड़े बेखौफ़ (निडर) हो गये हो ? क्या बात है ? कहते हैं —

नादारम बाख़ अज़ मौजे खतर बादोस्त पैवन्दम।

कहते हैं अब मुझे कोई डर नहीं, न मरने का, न दुनियां के किसी आराम का, क्योंकि मेरे दोस्त से मेरी पैवन्द लग गई है। कहते हैं फिर क्या हुआ ? कहते हैं —

ग़रीके आबे हैवांरा गमे मुरदन नमे बाशन्द।

कहते हैं जो अमृत में ग़रक हो जाये, उसको मौत का क्या खौफ़ है ? वह तो अमृत

का सरोवर है। श्री रामाकृष्ण परमहन्स जी के पास जब विवेकानन्द गये है, तो उनको यह कहा, अरे भई एक थाली थी, उसमें शहद भरी थी। अरे भई तुम मक्खी हो, इसको किस तरफ से खाओगे ? It is a sea of immortality यह अमृत का सरोवर है, तुम मक्खी हो, इसको किस तरफ़ से खाओगे ? कहने लगे, मैं इसको किनारे से खाऊंगा। कहने लगे क्यों ? कहने लगे कहीं लिबड़ न जाऊं, मर न जाऊं। कहने लगे (स्वामी रामकृष्ण) This is the sea of immortality यह तो अमृत का सरोवर है। Headlong इस में छलांग लगा दो। यहां मौत कहां ? अरे भई अमृत का सरोवर जहां फुहारें दे रहा है, भई उसमें अश्नान करो। काम बन जायेगा। इसका नाम है गुरू भक्ति ! और चलिये इससे आगे। इससे आगे भी बयान करते हैं। फरमाते हैं।

चुनां पुरशुद फजाये सीना अज़ दोस्त।

मेरे सीने की फ़ज़ा इतनी मेरे दोस्त, मित्र से भर गई है कि —

ख़्याले ख़ेश गुम शुद अज जमीरम ॥

अपने आपका भी ख्याल कि यह मैं हूं या वह, यह भी भूल गया। वही वह रह गया बस।

ऐ यारवजूदो हमीं रा बा यार गिरफ़्त।

कि मेरे जिस्म, मेरे हवास, सब उस प्रीतम ने बान्ध लिये। अब रह क्या गया ? कहते हैं —

नोमसग मरा बर मन, बाकी हमा ओ।

गुरू भक्ति, फिनाफिलशेख होना। जो फिनाफिलशेख हो गया वह फिनाफिल अल्लाह हो गया। यह बाहरी लवाज़मा है (ज़रूरी चीज़) जिससे हम उस हकीकत को पा सकते हैं। तो इसके लिये, आप समझे मेरी बात, कि पहली चीज़ प्रभु के पाने के लिये जो बड़ी भारी मददगार है, वह प्रेम है। प्रेम से आओ।

किन बातों से वह प्रेम बढ़ता है ? किससे वह प्रेम पीछे है ? वह गुरू कौन होता है ? सवाल तो अब यह रह गया ना। अगर हम फिनाफिलशेख़ हो भी जायें तो उसका फल क्या होगा ? फिनाफिलशेख होने से हमारे अन्तर, वह जो परमात्मा उसमें है, हममें प्रवेश करता है।

गुरू में आप समोये सबद बरताया।

यह गुरूबानी में आता है। गुरू में वह (प्रभु) आप समा रहा है। वह दूसरों को उसके साथ जोड़ता है World was made flesh and dwelt amongst us. अर्थात् वह शब्द सदेह हो गया और हमारे दरमियान रहा। तो क्योंकि वह खुद शब्द ही होता है, इसलिये हमें शब्द के साथ जोड़ सकता है। तो उसके साथ जुड़ना है। इसलिये मौलाना रूम साहब ने फरमाया है कि अगर तुम किसी वलीअल्लाह के नजदीक आये तो जानों तुम प्रभु के नज़दीक आ गये। अगर तुम किसी वली अल्लाह से दूर हो गये, समझो तुम परमात्मा से दूर हो गये। अगर तुम किसी Switch के नजदीक आ गये, समझो Power House के नजदीक आ गये यह कह दो। अगर तुम स्वीच से दूर हो गये, पावर हौस से दूर हो गये। वह बिजली परिपूर्ण है। तुम्हारा क्या संवारती है ? जब वह बिजली कहीं इकट्ठी हो जाये, वह तुम्हारे सारे काम करती है। अरे भई वह Link (जोड़ने वाली कड़ी) सबमें हैं, हमारा Link दबा हुआ है। उनका (महापुरूषों का) उभार कर रहा है। उसके पास जाते हैं, वह Enthuse करता (उभारता) वह Inject करता है। ''जीया दान के भक्ति लायन, "Life Impulse" देता है। इस Life Impulse (जीवन दान) देने का नाम है, नाम का देना। अक्षरों का बताना नहीं। Life Impulse का उभार देकर Contact देने का नाम, नाम का देना है, बैत होना, इसी ज़मीन पर। हजार आमिल फ़ाजिल बन जाओ, जब तक इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं जाते, उभार नहीं मिलता, तुम सारी उमर करते रहो, मन इन्द्रियों के घाट पर रहोगे। नेक कर्म करोगे तो नेक फल, बद कर्म करोगे तो बद, आना जाना बना रहेगा। एक बार अगर मनुष्य जीवन पाकर तुम इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गये, समझे, उस महारस को पा गये, दुनियां के रस फीके पड़ गये, आना जाना खतम हो जायेगा। तो यह है लिवाजमा, प्रेम, बार बार Receptive होकर दर्शन, नजदीकी या दूरी से। तीसरे सोहबत संगत का असर। अनपढ़ ज्यादा फ़ायदा उठा जाते हैं याद रखो। मैं आपको अर्ज करूं। हजूर हमारे गांव आये एक बार। वहां बड़ी मुखालफ़त थी, होती ही रहती है महापुरूषों की। उन्होंने बड़ी बड़ी दूर से लेक्चरार, कथई ज्ञानी बुलाये। उधर लेक्चर होने लगे और उधर हमारे सत्संगी कोई कोई जाया करता था। कहते हैं कि वह इतने लेक्चर देते हैं, उनको इतना भी नहीं पता कि नाम क्या होता है ? जो एक जागते पुरूष के पास बैठ जाये, वह वेदों शास्त्रों के सार को जानता है कि बात क्या है। वह तो पढ़कर जानेगा ना, पढ़कर भी नहीं जान सकते। उपनिषद में लिखा है कि अगर कोई

वेदों को बगैर गुरू के पढ़ता है, वह वेदों का चोर है। यह लफ्ज आते हैं। वह सही मायने नहीं करेगा, गलत मायने करने से नरकों को जायेगा। यह श्रुति मार्ग है। वेद श्रुति हैं, स्मृति नहीं। तो श्रुति (शब्द) को पाने के लिये, जो श्रुति (शब्द) मुजस्सम (सदेह) है उससे मिलेगा ना। यह सुनने का राज़ है। कल ही एक भाई मुझसे बात कर रहे थे कि वेदों में तो इसका जिकर नहीं, उपनिषदों में आता है, गीता में आता है। वह कहने लगे कि भाई वेदों में इस बात का जिकर नहीं। मैंने कहा भई वेदों में है या नहीं, मैंने संस्कृत तो पढ़ी नहीं। कम से कम उपनिषदों के जो मैंने तरजुमें पढ़े हैं, उनमें जिकर आता है। गीता में जिकर आता है। रामायण में आता है। फलानी जगह है। कहते हैं हाँ वह तो है, वेदों में नहीं है। मैंने कहा आपको पता है यह क्यों नहीं किया ? यह सीना बसीना इल्म है। यह गुरू से गुरू प्रणाली में चलता है, हमेशा सीना बसीना रहा इसलिये उसका बयान नहीं इशारे ही दिये हैं बयान तो नहीं किया। यह तो Practical चीज़ है।

तो प्रभु के पाने के लिये आपने तीन ज़ीने समझे भई। पहला प्रेम। भक्ति भाव, प्रेम। इन्द्रियों के भोगों रसों का नाम प्रेम नहीं याद रखो।

इन्से इशके आं कि अज़ गन्दम बिरोयद।

याद रखो खाने के हिस्से, जो विषय विकार जो है, उसका नाम प्रेम नहीं है। यह प्रेम है जो, रूह को प्रभु के साथ मिलाता है। ''कतरा दरिया साख़तन्द'' यह कतरे को समुन्दर बनाता है। वह महापुरूष आप मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर है, तुमको मन इन्द्रियों के घाट पर क्यों फैलायेगा ? हां उभार के लिये तुमको तवज्जो देता है, चलो भाई। तो पहली बात प्रेम, सबसे बड़ी। दूसरी सोहबत और संगत, बार बार दर्शन और सत्संग। यह तीन चीजें हैं जिससे तुमको यह दौलत मिल सकेगी। अब सवाल यह रह गया कि वह तालीम क्या देते हैं ? यह मज़मून अब शाम को आपके सामने रखा जायेगा। थोड़े लफ्ज़ों में, फिलहाल, लिवाजमा जो था, निहायत जरूरी था। मज़मून तो बहुत लम्बा है, मगर थोड़े लफ्जों में आपके सामने रखा गया। ❑

✦ ✧ ✦

रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.